उर्दू शिक्षण: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ

- राजीव अग्रवाल
- दीपा चौरसिया
- पूनम देवी

उर्दू शिक्षण: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ

राजीव अग्रवाल

अध्यक्ष- शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

दीपा चौरसिया

M.Ed.

पूनम देवी

B.Sc.(pcm), B.Ed.

प्राक्कथन

शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णतः अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छाशक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। शिक्षा को शब्द संग्रह अथवा शब्द समूह के रूप में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा से ही व्यक्ति चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण करती है, चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है और व्यक्ति को संस्कारित करती है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है सही अर्थ में शिक्षा यही है। साधारण बोलचाल की भाषा में शिक्षा का अर्थ विद्यालयी शिक्षा से लिया जाता है। बालक के भावी जीवन की तैयारी तथा उसमें क्षमतापूर्वक दायित्व निभाने की क्षमता प्रदान करना शिक्षा का उद्देश्य समझा जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिवर्तन लाती है, जिससे वह उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यन्त चलती है।

विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों को अन्य विषयों के साथ दो भाषाओं का ज्ञान कराया जाता है। प्रथमतः क्षेत्रीय तथा द्वितीय अन्य भाषा।

इसमें उर्दू एक भारतीय आर्यभाषा है, जो भारतीय संघ की 22 राष्ट्रीय भाषाओं में से एक है हालांकि यह फ़ारसी और अरबी से प्रभावित है लेकिन यह हिन्दी के निकट है और इसकी उत्पत्ति और विकास भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय- अध्याय प्रथम में अध्ययन का औचित्य, अध्ययन के उद्देश्य, शोध विधि एवं अध्ययन के महत्व का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय- अध्याय द्वितीय में अध्ययन शोधकार्यों का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय- अध्याय तृतीय में उर्दू शब्द की उत्पत्ति, उर्दू का विकास, उर्दू का आधुनिक विकास, उर्दू का हिंदी से साम्य एवं विभेद का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- अध्याय चतुर्थ में उर्दू शिक्षण परम्परागत एवं औपचारिक स्वरूप तथा उर्दू शिक्षा के संस्थानों का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय- अध्याय पंचम में यू0 पी0 बोर्ड की उर्दू पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन तथा उर्दू की पाठ्य-पुस्तकों में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं।

षष्ठ अध्याय- अध्याय षष्ठ में उर्दू शिक्षा के आधुनिक आयाम यथा उर्दू पत्र-पत्रिकाएं, उर्दू ब्लॉग्स, उर्दू वेबसाइट्स, ई-बुक्स, ऐप्स, यूट्यूब चैनल एवं उर्दू के विभिन्न सॉफ्टवेयर का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय- अध्याय सप्तम में निष्कर्ष, अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता एवं भावी अध्ययन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु-शोध प्रबंध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का टैब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिये सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित हर एक घटक में प्रेरणा का संचार करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

23 सितम्बर, 2021

राजीव अग्रवाल

दीपा चौरसिया

पूनम देवी

विषय सूची

प्रथम अध्याय : सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना :

अभ्युदय काल से ही मानव अपनी बौद्धिक शक्ति के द्वारा बहुत सी प्राकृतिक परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाता चला आ रहा है। इन्हीं परिस्थितियों और सामाजिक ज्ञान–विज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित होने वाले कार्य को अन्नतर में **'शिक्षा'** की संज्ञा दी गयी है। आज के युग में यह कार्य विद्यालय औपचारिक रूप से अपनी मधुरमयी भाषा तथा उन्नतीय प्रवृत्ति के द्वारा जन–जन तक सम्प्रेषित कर रहे हैं।

शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियन्त्रण स्थापित हो सकता है शिक्षा को शब्द संग्रह अथवा शब्द समूह के रूप में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिन्तन करना सीखता है तथ्यों के संग्रह मात्र का नाम शिक्षा नहीं है, इसका सार मन में एकाग्रता के रूप में प्रकट होना चाहिए। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण करती है, चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है और व्यक्ति को संस्कारित करती है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है वही अर्थ में शिक्षा है। साधारण बोलचाल की भाषा में शिक्षा का अर्थ विद्यालयी शिक्षा से लिया जाता है। बालक के भावी जीवन की तैयारी तथा उसमें क्षमतापूर्वक दायित्व निभाने की क्षमता प्रदान करना शिक्षा का उद्देश्य समझा जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिवर्तन लाती है जिससे वह उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलती है।

विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों को अन्य विषयों के साथ कम से कम दो भाषाओं का ज्ञान कराया जाता है। प्रथमतः क्षेत्रीय द्वितीय अन्य भाषा।

अतः हमारे भारतीय संविधान में आठवीं अनुसूची के अन्तर्गत 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है–

असमिया	उड़िया
बांग्ला	पंजाबी
गुजराती	संस्कृत
हिन्दी	सिन्धी
कन्नड़	तमिल
कश्मीरी	तेलगू
कोंकणी	उर्दू
मलयालम	बोडो
मणिपुरी	मैथिली
मराठी	संथाली
नेपाली	डोंगरी

अतः इनमें से उर्दू एक भारतीय आर्यभाषा है जो भारतीय संघ की 22 राष्ट्रीय भाषाओं में से एक है हालांकि यह फारसी और अरबी से प्रभावित है लेकिन यह हिन्दी के निकट है और इसकी उत्पत्ति और विकास भारतीय उपमहाद्वीप में हुई।

दोनों भाषाएं एक ही भारतीय आधार से उत्पन्न हुई हैं। स्वर वैज्ञानिक और व्याकरण के स्तर पर इनमें काफी समानता है और ये एक ही भाषा प्रतीत होती है लेकिन शब्द संग्रह के स्तर पर इनमें विभिन्न स्रोतों (उर्दू में अरबी और फारसी और हिन्दी में संस्कृत) से व्यापक रूप से गृहीत शब्द हैं, जिससे इन्हें स्वतंत्र भाषाओं का दर्जा दिया जा सकता है। इनके बीच सबसे बड़ा विभेद भाषा लेखन के स्तर पर परिलक्षित होता है। हिन्दी के लिए देवनागरी का प्रयोग होता है और उर्दू के लिए

अरबी–फारसी लिपि प्रयुक्त होती है। जिसे आवश्यकतानुसार स्थानीय रूप में परिवर्तित कर लिया गया है।

उर्दू हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्द कम है और **अरबी–फारसी और संस्कृत के तद्भव शब्द ज्यादा हैं।** ये मुख्यतः दक्षिण एशिया में बोली जाती है। यह भारत की राष्ट्रभाषा है इसके अतिरिक्त भारत के राज्य तेलांगना, दिल्ली, बिहार, और उत्तर प्रदेश की सरकारी भाषा है।

खड़ीबोली हिन्दी में अरबी–फारसी के मेल से जो भाषा बनी वह 'उर्दू' कहलायी। मुसलमानों ने 'उर्दू' का प्रयोग छावनी, शाही लश्कर और किले के अर्थ में किया है। इन स्थानों में बोली जाने वाली व्यावहारिक भाषा 'उर्दू की जबान' हुई।

हिन्दी और उर्दू के एक मिले–जुले रूप को हिन्दुस्तान कहा गया है। भारत में अंग्रेज शासकों की कूटनीति के फलस्वरूप हिन्दी और उर्दू एक दूसरे से दूर होती गयी। एक की संस्कृतनिष्ठता बढ़ती गयी और दूसरे का फारसीपन। लिपिभेद तो था ही।

सांस्कृतिक वातावरण की दृष्टि से भी दोनों का पार्थक बढ़ता गया। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों ने एक ऐसी मिश्रित भाषा को हिंदुस्तानी नाम दिया जिसमें अरबी–फारसी या संस्कृत के कठिन शब्द न प्रयुक्त हों तथा जो साधारण जनता के लिए सहजबोध्य हो। आगे चलकर देश के राजनायकों ने भी इस तरह की भाषा को मान्यता देने की कोशिश की और कहा कि इसे फारसी और नागरी दोनों लिपियों में लिखा जा सकता है पर यह कृत्रिम प्रयास अंततोगत्वा विफल हुआ। इस तरह की भाषा का ज्यादा झुकाव उर्दू की ओर ही था।

भाषाविद् हिन्दी एवं उर्दू को एक ही भाषा मानते हैं। व्याकरणित रूप से उर्दू और हिन्दी में लगभग शत्–प्रतिशत् समानता है केवल कुछ विशेष क्षेत्रों में शब्दावली के स्रोत में अंतर होता है। कुछ विशेष ध्वनियां उर्दू में अरबी और फारसी से ली गयी

हैं। **अतः उर्दू को हिन्दी की एक विशेष शैली माना जा सकता है।**

1.2 *समस्या का प्रादुर्भाव :*

हमारे भारतीय संविधान में आठवीं अनुसूची के अन्तर्गत 22 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है जिसमें से एक भाषा **उर्दू** भी है ये मुख्यतः दक्षिण एशिया में बोली जाती है। यह भारत की सरकारी भाषाओं में एक है तथा पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा है इसके अतिरिक्त भारत में अनेक **राज्य तेलांगना, दिल्ली, बिहार और उत्तर प्रदेश की सरकारी भाषा है।**

इन सभी के बावजूद यह भाषा सरकार द्वारा संचालित सभी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाने के लिए सम्मिलित की गई है किन्तु विद्यालयों की खासकर प्राथमिक विद्यालयों की खस्ताहाल स्थिति देखकर बहुत ही निराशा होती है। विद्यालय में नियुक्त उर्दू भाषा के अध्यापक ऐसे भी हैं जिन्हें उर्दू भाषा में अपना नाम भी लिखना नहीं आता तथा उन्हें बालकों को पढ़ाने लिखाने से कोई मतलब नहीं रहता उन्हें सिर्फ अपनी जीविका के लिये शिक्षा को व्यवसाय बना रखा है।

किन्तु यह एक अत्यन्त सोचनीय विषय है कि **जिन अध्यापकों को उर्दू भाषा में अपना नाम तक लिखना नहीं आता वे उर्दू शिक्षण कैसे करते हैं?** इन्हीं सभी समस्याओं को देखते और समझते हुए इसी सापेक्ष में इन समस्याओं को उजागर करने के लिए शोध का विषय उर्दू शिक्षण वर्तमान परिदृश्य एवं भावी सम्भावनाएं बनाया।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की उत्पत्ति हुई जिसके निराकरण में शोधकर्त्री ने शोध किया।

1.3 *अध्ययन का औचित्य :*

अंग्रेजों के भारत में आने के समय तक भारत के आम नागरिक दैनिक कार्यों में

स्थानीय भाषाओं का व्यवहार करते थे, उच्च शिक्षा, शास्त्रीय चर्चा जैसे कार्यों के लिए संस्कृत का व्यवहार करते थे, मुस्लिम सभ्यता के संपर्क के बाद किन्ही–किन्ही कार्यों के लिए फारसी का प्रयोग भी होने लगा था।

अंग्रेजों ने सत्ता हथियाने पर पहले तो हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा में सरकारी कामकाज किया पर बाद में अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाया, ताकि वह सारा काम उनकी देखरेख में चले। इस काम के लिए उन्हें भारतीय भाषाओं को जानने वाले ऐसे भारतीय चाहिए थे जो अंग्रेजी के भी जानकार हों अतः उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा की शुरूआत की जिसका माध्यम भी अंग्रेजी को ही बनाया, संस्कृत और फारसी से उन्हें कोई लेना देना नहीं था। अंग्रेजी काल में और उसके पश्चात् समय–समय पर शिक्षा के माध्यम की भाषा की समस्या पर चिंतन मनन किया गया और विभिन्न प्रकार के उपायों को अपनाया भी गया।

वर्तमान समय में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अनुसार माध्यमिक स्तर तक मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) को शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया गया है। परन्तु उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षा का माध्यम एक समस्या बनी है।

इस प्रकार अंग्रेजी व हिन्दी के मुद्दे पर फंसकर शिक्षा के माध्यम की भाषा एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है और इस अनसुलझी समस्या ने शिक्षा के स्तर को एकदम निम्न स्तर पर पहुँचा दिया है।

अतः प्राथमिक स्तर पर व माध्यमिक स्तर पर उर्दू भाषा को भी उसका स्थान मिलना चाहिए इसलिए इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन की आवश्यकता हुई। शोधकर्त्री प्रस्तुत अध्ययन में उर्दू के महत्व तथा शिक्षा में उर्दू को (एक भविष्य के रूप में) शामिल करने से शिक्षा में सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करते हुये वर्तमान में इसकी महत्ता को प्रदर्शित किया गया है।

शोधकर्त्री को एम.ए. उर्दू की उपाधि प्राप्त है शोधकत्री ने एम.एड. में अध्ययन

के दौरान पाया कि उर्दू शिक्षा पर शोध कार्य नगण्य मात्र है।

उर्दू के विकास में अनुसंधान कार्य की महती भूमिका होती है।

अतः उर्दू पर शोध कार्य आज की आवश्कता है।

1.4 समस्या कथन :

अध्ययन की आवश्यकता शोधकर्त्री द्वारा की गई अनुभूति तथा सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के आधार पर समस्या जिस रूप में प्रकट हुई उसका कथन निम्न प्रकार से किया गया है–

उर्दू शिक्षण : वर्तमान परिदृश्य एवं भावी सम्भावनाएं

1.5 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :

पारिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की गई समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या के क्षेत्र से बाहर निकालकर स्पष्ट करना है।

1.5.1 उर्दू– ज्ञानकोश विकिपीडिया के अनुसार– ''खड़ी बोली हिन्दी में अरबी–फारसी के मेल से जो भाषा बनी वह उर्दू कहलायी।''

(Webliography 11)

Wikipedia.org– ''उर्दू हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम् शब्द कम हैं और अरबी–फारसी और संस्कृत से तद्भव शब्द ज्यादा हैं।''

प्रस्तुत लघु शोध में उर्दू से तात्पर्य कतिपय विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली ''उर्दू'' भाषा से है। जिसकी लिपि फारसी है।

1.5.2 शिक्षण : विकीपीडिया के अनुसार– ''जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं।'' (Webliography 10)

स्वामी विवेकानन्द गुरूकुल के अनुसार–

''जब एक गुरू अपने विद्यार्थी को ज्ञान देता है तो इसे ही शिक्षण कहा जाता है।''

प्रस्तुत लघु शोध में शिक्षण से तात्पर्य औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत विद्यालयों में ''उर्दू'' के पठन–पाठन (शिक्षण–अधिगम) की प्रक्रिया से है।

(Webliography 9)

1.5.3 वर्तमान : ''वर्तमान से तात्पर्य उस समय से है जो इस समय अस्तित्व या सत्ता में विद्यमान है।'' (Webliography 8)

प्रस्तुत लघु शोध में 'वर्तमान' से तात्पर्य वर्ष 2016–2017 से है।

Business Dictionary के अनुसार–

1.5.4 परिदृश्य का अर्थ– ''Internally consistent verbal picture of a phenomenon sequence of evends, or situation. Based on certain assumptions and factor chosen by its ere creator.'' (Webliography 6)

प्रस्तुत लघु शोध में **'परिदृश्य'** से तात्पर्य विज्ञान सम्बन्धी औपचारिक तथा अनौपचारिक वातावरण से है।

Swiftutors.com के अनुसार :

1.5.5 भावी से तात्पर्य : ''आने वाला पल जब तक नहीं आता है उसकी निश्चितता सदैव अनिश्चित बनी होती है, क्योंकि भविष्य काल का एक

हिस्सा है। उसे भविष्य काल कहते हैं।''

प्रस्तुत लघु शोध में 'भावी' से तात्पर्य वर्ष 2016–2017 के बाद आने वाले सत्रों से है।

WWW.hindi2dictionrry.com के अनुसार

संभावना का अर्थ : ''किसी घटना या बात के सम्बन्ध में वह स्थिति जिसमें उसके पूर्ण होने की आशा हो।''

प्रस्तुत लघु शोध ''संभावना'' से तात्पर्य भविष्य में विज्ञान सम्बन्धी सुधारों के अनुमान से है।

1.6 *अध्ययन के उद्देश्य :*

- उर्दू की पाठ्य पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
- उर्दू शिक्षण सम्बन्धी आधुनिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
- उर्दू शिक्षण की विषय वस्तु की बोधगम्यता का अध्ययन करना।
- उर्दू के विभिन्न सॉफ्टवेयरों का अध्ययन करना।
- वर्तनी जाँचक (Spell Checker)
- प्रवाचक (टेस्ट टू स्पीच)
- उर्दू शब्दकोष
- अनुवादक
- टंकण
- प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।
- उर्दू के पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.7 अध्ययन का सीमांकन :

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरूप अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन अध्ययन की चहारदीवारी होता है। शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है–

- प्रस्तुत अध्ययन यू0पी0 बोर्ड की पुस्तकों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन कक्षा–8 तक सीमित रहेगा।
- प्रस्तुत अध्ययन में अन्य बोर्ड की पुस्तकों का अध्ययन सम्मिलित नहीं है जैसे– NCERT, CBSE आदि।

1.8 शोध विधि :

अनुसंधान की विभिन्न विधियों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया गया है सामान्यतः हम विधि को ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि तथा प्रयोगात्मक विधि आदि से जानते हैं। हेनरी लेस्टर स्मिथ ने तो 131 शब्दावलियों की एक सूची प्रस्तुत की है जिसे शिक्षा संबंधी अनुसंधानों मे विभिन्न प्रसंगों व विभिन्न रूपों में प्रयोग किया गया है। वास्तव में हम इन्हें विधियां न कहकर अनुसंधान के प्रकार कहें तो अधिक संगत होगा। प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकार की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। अतः विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अनुसंधान कैसा होगा? अथवा उसकी विधि क्या होगी? यदि उचित रूप से विचार करें तो सबसे अच्छा होगा कि अनुसंधानकर्ता किसी समस्या के ऐतिहासिक पक्ष का विश्लेषण करे, वर्तमान का

अध्ययन कर तथा आवश्यकतानुसार प्रयोग भी करें। इस प्रकार की समन्वित प्रणाली ही सर्वोत्तम प्रणाली है। अनुसंधान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है–

- **मूलभूत अनुसंधान (Fundamental or basic research)**

ऐसे अनुसंधान जिनके निष्कर्षों द्वारा किन्ही विशेष वैज्ञानिक नियमों का प्रतिपादन हो, इस वर्ग में आते हैं। इस अनुसंधानकर्ता प्राकृतिक घटनाओं को अपने अध्ययन के निष्कर्षों से संबन्धित करता है। इस प्रकार के अनुसंधान का मुख्य कारण तथ्यों का एकत्रीकरण है क्योंकि तथ्य एकत्रित करने योग्य हैं। मूलभूत अनुसंधान इस प्रकार हमारे ज्ञान में दृष्टि करता है।

- ***व्यवहृत अनुसंधान*– (Applied Research)**

इस वर्ग में वे अनुसंधान आते हैं जिनके द्वारा किसी समस्या विशेष का समाधान आवश्यक हो। इसमें विज्ञान के कुछ विशेष नियमों का किसी विशेष मामले पर प्रभाव जाना जाता है एण्ड्रीआस के अनुसार तथ्यों द्वारा यदि अनुसंधानकर्ता किसी क्रियात्मक समस्या का समाधान करे तो यह अनुसंधान व्यवहृत अनुसंधान कहलाता है।

- ***प्रविधि अनुसंधान :* (Technique Research)**

इस प्रकार के अनुसंधान का संबन्ध निरीक्षण की विधियां संबन्धी समस्याओं के समाधान से है। जब किसी चर के निरीक्षण की अनेक विधियाँ उपलब्ध हों तो प्रविधि अनुसंधान इन विधियों का तुलनात्मक अध्ययन कर इनकी प्रभाविता का स्पष्टीकरण करता है।

- ***ऐतिहासिक अनुसंधान :*** (Historical Research)

इसका संबन्ध भूत से है तथा यह भविष्य को समझने के लिए भूत का विश्लेषण करता है अतः किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार से समुचित समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है। यह अनुसंधान शिक्षा मनोविज्ञान एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में चिंतन को नई दिशा एवं नीति निर्धारण में सहायता करता है।

❖ ***प्रयोगात्मक अनुसंधान :*** (Experimental Research)

प्रयोगात्मक अनुसंधान वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति है। यह एक उन्नत विधि है, जिसके अन्तर्गत हम कोई सूक्ष्म समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रयोगात्मक विधि अर्थ तथा उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत व्यावहारिक है क्योंकि इसमें अध्ययन नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है।

❖ ***सर्वेक्षण अनुसंधान :*** (Survey Research)

इस प्रकार के अनुसंधान का संबन्ध उन सामान्य समस्याओं से है जिसके अन्तर्गत यह निश्चित करते हैं कि कौन सा चर अन्य किसी चर से किसी रूप में किसी सीमा तक सम्बद्ध है इस प्रकार चरों की स्थिति एंव उनके सम्बन्धों की स्थिति का सर्वेक्षण ही इसका मूल उद्देश्य होता है। सर्वेक्षण अनुसंधान की प्रवृत्ति सम्वेषणात्मक (Exploratory) होने के कारण किसी समस्या पर अनुसंधान के प्राथमिक स्तर पर बहुत उपयोगी है।

सर्वेक्षण अनुसंधान को पुनः चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

- वर्णनात्मक
- विश्लेषणात्मक
- विद्यालय सर्वेक्षण

➢ सामाजिक सर्वेक्षण

प्रस्तुत अनुसंधान में प्रयुक्त शोध विधि–

अनुसंधान के मुख्यतः तीन उद्देश्य होते हैं–

1. सैद्धान्तिक
2. तथ्यात्मक
3. उपयोग

ये उद्देश्य अनुसंधान की विभिन्न विधियों एवं शोध व्यूह के प्रयोग करने पर प्राप्त किये जाते हैं। विधि अनुसंधान क्रिया को परिभाषित करने का एक ढंग है। जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है।

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्त्री द्वारा वर्णनात्मक विधि का चयन किया गया है।

1.9 *अध्ययन का महत्व :*

उर्दू मिठास और तहजीब की भाषा है अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी इस भाषा का काफी महत्व है। उर्दू अदब का इतिहास गवाह है कि यह भाषा प्रारम्भिक काल से ही जीविकोपार्जन में सहायक रही है। आज भी रोजगार की दृष्टि से उर्दू भाषा में अपना शानदार कैरियर बना सकते हैं।

देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में उर्दू की शिक्षा दी जाती है। वैसे उर्दू की प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था मदरसों के अलावा सरकार द्वारा स्कूलों में भी की गई है इसके अलावा जिनकी मात्रभाषा उर्दू नहीं है उनके लिए देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा जैसे कोर्सेस का संचालन किया जाता है।

यदि आपने बारहवीं तक उर्दू भाषा एक विषय के रूप में पढ़ रखी है तो आगे आप बी.ए. (आनर्स) एम.ए. उर्दू के अलावा कोई भी कोर्स उर्दू भाषा में कर सकते हैं। इसके अलावा देश के बहुत से प्रमुख विश्वविद्यालय उर्दू भाषा में जनसंचार के लिए पी. जी. डिप्लोमा कोर्सेस भी संचालित कर रहे हैं।

उर्दू में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, एडवांस डिप्लोमा एवं पी.जी. डिप्लोमा के सारे कोर्सेस की अवधि एक वर्ष निर्धारित है जबकि बैचलर डिग्री के लिए 3 वर्ष तथा मास्टर डिग्री के लिए 2 वर्ष की अवधि निर्धारित है। उर्दू में बैचलर, मास्टर, एम.एड., एम.फिल., पी.एच.डी. आदि की डिग्री हासिल करने वालों के लिए रोजगार के बहुत सारे अवसर उपलब्ध हैं क्योंकि इस भाषा की पढ़ाई विदेशों में अनिवार्य या ऐच्छिक रूप से कहीं न कहीं होती ही है।

अतः कहीं भी उर्दू शिक्षक बनकर भविष्य बनाया जा सकता है। उर्दू में पीएच. डी. करने वाले कॉलेजों और यूनीवर्सिटीज में, बतौर लेक्चरर, रीडर, एवं प्रोफेसर की नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। उर्दू में शोधकार्य करने के लिए भी यू.जी.सी. कई तरह की छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती रहती है। देश एवं विदेश में विभिन्न मंत्रालयों में उर्दू अनुवादक का पद निर्धारित है। अन्य भाषा के साथ उर्दू डिग्री वाले इस पद के हकदार बन सकते हैं।

दुनिया में प्रायः हर देश के दूतावास एक–दूसरे के यहाँ स्थापित हैं जिसके द्वारा भाषा, साहित्य, संस्कृति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापना आदि से सम्बन्धित कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। आकर्षक वेतन व अन्य सुविधाओं के लिए उर्दू डिग्री होल्डर इसमें अपना भविष्य बना सकते हैं। उर्दू विषय अपनाकर अनेक प्रतियोगी विभिन्न राज्यस्तरीय एवं संघस्तरीय उच्च प्रशासनिक पदों को प्राप्त कर सकते हैं।

शोधकर्त्री एम.ए. उर्दू की छात्रा रही है। जिसने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बन्धित कॉलेजों से उर्दू की बी.ए. एवं एम.ए. की उपाधियाँ ग्रहण की तथा टी.ई.टी.

एवं सी.टी.ई.टी. में भी एक अन्य भाषा के रूप में उर्दू भाषा का चयन किया तथा सफलता भी प्राप्त की।

अतः उपर्युक्त विवरण से उर्दू भाषा का महत्व स्पष्ट किया जा सकता है।

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना :

अनुसंधान ज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान के लिए नवीन प्रभाव पूर्ण शोध सृजन हेतु सम्बन्धित साहित्य की जानकारी की आवश्यकता अपरिहार्य है। साधारणतः किसी क्षेत्र का साहित्य एक ऐसी आधाशिला है जिस पर समस्त भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो किया जाने वाला कार्य प्रभावहीन होता जाता है तथा यह भी संभव हो जाता है कि किसी भी कार्य की पुनरावृत्ति ही हो।

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ :

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं को प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य :

सम्बन्धित कार्य के सर्वेक्षण के मुख्य रूप में निम्नांकित पाँच कार्य हैं–

❖ यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक पृष्टभूमि प्रदान करता

है। प्रत्येक ओर धारणा को स्पष्ट करता है।

- ❖ इसके द्वारा यह स्पष्ट होता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है। इसके क्या, कब, कहाँ, किसने और कितना अनुसंधान कार्य किया। इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधानक हो जाता है।

- ❖ सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग में लाये जाने योग्य उपकरण तथा आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली उपर्युक्त विधियों को (स्पष्ट) करता है।

- ❖ यह इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षों की उपयोगिता क्या होगी।

- ❖ इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाने, समस्या के सीमाकंन और परिकल्पना के निर्माण में सहायक होता है।

2.1.3 सम्बन्धित साहित्य का महत्व :

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की उपयुक्तता को कुछ विद्वान निम्न शब्दों में दर्शाता है–

गुड़ बार तथा स्केट्स–''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से समन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।'' (राव, पारस पृ. 95)

जॉन डब्ल्यू बेस्ट– ''व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों भंडार में मानव का निरन्तर योग

सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।''

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित शोधकार्य :

तम्बोली बेनजीर एस (2015) ''उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों में आंग्ल भाषा वाचन कार्यक्रम सम्प्रेषण उपागमशीलता की प्रभावशीलता तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित निष्कर्ष स्पष्ट हुए है–

1. ज्यादातर उर्दू माध्यम के छात्र आंग्ल समाचार पत्र नहीं पढ़ते हैं।
2. उर्दू माध्यम के छात्रों को अंग्रेजी शब्दकोष में कठिनाई होती है।

शाह सईद यूसूफ (2013) जवाहर लाल नेहरू यूनीवर्सिटी, ''ब्रिटिश भारत में उच्च शिक्षा का राजनैतीकरण– नई दिल्ली अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी की स्थापना''

प्रस्तुत शोध में बताया गया है कि यह यूनीवर्सिटी 1920 में अस्तित्व में आई तथा इसकी स्थापना के पीछे अनेक राजनैतिक एवं कारण थे।

मुजफ्फर आलम (2014) जवाहर लाल नेहरू यूनीवर्सिटी, नई दिल्ली

''भारतीय शिक्षा में मदरसा प्रणाी, सातत्व एवं परिवर्तन'' मदरसा में आधुनिक पाठ्यक्रमों का विरोध नहीं किया गया है तथापि उनमें आधुनिक पाठ्यक्रमों को बहुत कम अपनाया गया है तथा इसको अपनाने की गति अत्यन्त धीमी है।

2.3 निष्कर्ष :

उर्दू से सम्बन्धित उपर्युक्त शोधों में उर्दू के शिक्षण संस्थान , उर्दू विद्यार्थियों में आंग्ल भाषा की प्रवीणता एवं मदरसा प्रणाली का अध्ययन किया गया है किन्तु उर्दू शिक्षण व आधुनिक आयामों के सम्बन्ध में कोई भी अध्ययन नहीं हुआ है।

अतः शोधकर्त्री द्वारा इस विषय पर शोध करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय : उर्दू का विकास

3.1 उर्दू का उद्गम :

उद्गम की दृष्टि से उर्दू वही है जो हिन्दी। देखने में केवल इतना ही अंतर मालूम होता है कि उर्दू में अरबी–फारसी शब्दों का प्रयोग कुछ अधिक होता है और हिन्दी में संस्कृत शब्द प्रयोग होते हैं इसकी लिपि देवनागरी से भिन्न है और कुछ मुहावरों के प्रयोग ने इसकी शैली और ढांचे को बदल दिया है। वहाँ जो मिली–जुली भाशा बोली जाती थी उसको उर्दू वालों की भाषा बोली जाती थी। क्रमशः वही भाषा स्वयं उर्दू कही जाने लगी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग 17 वीं शताब्दी में मिलता है।

उर्दू की प्रारम्भिक रूप या तो सूफी फकीरों की बानी में मिलता है या जनता की बोलचाल में। भाषा की दृष्टि से उर्दू के विकास में पंजाबी का प्रभाव सबसे पहले दिखाई पड़ता है। 17 वीं और 18 वीं शताब्दी में ब्रजभाषा का गहरा प्रभाव उर्दू पर पड़ा और बड़े–बड़े विद्वान कविता में ''ग्वालियर भाषा'' को अधिक शुद्ध मानने लगे किन्तु उसी युग में कुछ विद्वानों और कवियों ने उर्दू को नया रूप देने के लिए ब्रज के शब्दों का बहिष्कार किया और अरबी–फारसी के शब्द बढ़ाने लगे। सच तो यह है कि उर्दू भाषा के बनने में जो संघर्ष जारी रहा उसमें ईरानी और हिन्दुस्तानी तत्व एक दूसरे से टकराते रहे और धीरे–धीरे हिन्दुस्तानी तत्व ईरानी तत्व पर विजय पाता

गया। "**अनुमान लगाया गया है कि जिस भाषा को उर्दू कहा जाता है उसमें 85 प्रतिशत शब्द वें ही हैं जिनका आधार हिंदी का कोई न कोई रूप है शेष 15 प्रतिशत में अरबी–फारसी, तुर्की और अन्य भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं।**" जो सांस्कृतिक कारणों से मुसलमान शासकों के जमाने में स्वाभाविक रूप से उर्दू में घुलमिल गए थे इस समय उर्दू उत्तरी भारत के कई भागों में कश्मीर और आन्ध्र प्रदेश में बहुत से लोगों की मातृभाषा है।

3.2 उर्दू शब्द की उत्पत्ति :

उर्दू शब्द मूलतः तुर्की भाषा का है तथा इसका अर्थ है 'शाही शिविर' या 'खेमा' (तम्बू) तुर्कों के साथ यह शब्द भारत में आया और इसका यहाँ प्रारम्भिक अर्थ खेमा या सैन्य पड़ाव था। शाहजहाँ ने दिल्ली में 'लालकिला' बनवाया। यह भी एक प्रकार से उर्दू था, किन्तु बहुत बड़ा था। अतः **इसे 'उर्दू' न कहकर 'उर्दू ए मुअल्ला' कहा गया तथा यहाँ बोली जाने वाली भाषा विशेष के अर्थ में 'उर्दू' शब्द इस 'जबान ए उर्दू ए मुअल्ला' का संक्षेप है।**

मुहम्मद हुसैन आजाद उर्दू की उत्पत्ति ब्रजभाषा से मानते हैं। 'आबे हयात' में वे लिखते हैं कि हमारी जबान ब्रजभाषा से निकली है।

उर्दू भाषा हिन्द आर्य भाषा है। **उर्दू हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्द कम है** और अरबी–फारसी और संस्कृत से **तद्भव के शब्द ज्यादा हैं** ये मुख्यतः दक्षिण एशिया में बोली जाती है। यह भारत की सरकारी भाषाओं में से एक है। इसके अतिरिक्त भारत के राज्य **तेलांगना, दिल्ली, बिहार और उत्तर प्रदेश की सरकारी भाषा है।**

3.3 उर्दू का विकास :

उर्दू भारत की आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में से एक है इसका विकास मध्ययुग के उत्तरी भारत के उस क्षेत्र में हुआ जिसमें आज पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली और पूर्वी पंजाब सम्मिलित है इसका आधार इस प्राकृत और अपभ्रंस पर था जिसे शौरसेनी कहते थे और जिसे खड़ीबोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी और पंजाबी आदि ने जन्म लिया था मुसलमानों के भारत में आने और पंजाब तथा दिल्ली में बस जाने के कारण इसकी प्रदेश की बोलचाल की भाषा में फारसी और अरबी शब्द भी सम्मिलित होने लगे। धीरे–धीरे उसने प्रथा का रूप धारण कर लिया। मुसलमानों का राज्य स्थापित हो जाने के कारण ऐसा होना स्वाभाविक ही था कि धर्म नीति रहन–सहन, आचार–विचार का ढंग उस भाषा में झलकने लगा।

इस प्रकार उसके विकास में कुछ ऐसी प्रवृत्तियां सम्मिलित हो गईं जिनकी आवश्यकता उस समय की दूसरी भारतीय भाषाओं को नहीं थी। पश्चिम उत्तर प्रदेश और बोलचाल में खड़ीबोली का प्रयोग होता था उसी के आधार पर बाद में उर्दू का साहित्य रूप निर्धारित हुआ। इसमें काफी समय लगा देश के कई भागों में थोड़े–थोड़े अंतर के साथ इस भाषा का विकास अपने–अपने ढंग से हुआ।

उर्दू का मूल आधार तो खड़ीबोली ही है किन्तु दूसरे क्षेत्रों की बोलियों का प्रभाव भी उस पर प्रभाव पडता रहा। ऐसा होना ही चाहिए था क्योंकि आरम्भ में इसको बोलने वाली या तो बाजार की जनता थी अथवा वे सूफी फकीर थे जो देश के विभिन्न भागों में घूम–घूम कर अपने विचारों का प्रचार करते थे। इसी कारण इस भाषा के लिए कई नामों का प्रयोग हुआ है। अमरी सुखरों ने उसको ''**हिन्दी**'', ''**हिन्दवी**'', ''**जबाने देहलवी**'' कहा था, दक्षिण में पहुँची तो ''**दक्खिनी**'' कहलाई गुजरात में ''**गुजरी**'' कही गई। बाद में इसको ''**जबाने उर्दू**'', ''**उर्दू ए मुअल्ला**'' या केवल ''**उर्दू**'' कहा जाने लगा। यूरोपीय लेखकों ने इसे साधारणतः ''**हिन्दुस्तानी**'' कहा है और कुछ अंग्रेज लेखकों ने इसको ''**मूस**'' के नाम से सम्बोधित किया है। इन कई नामों से इस भाषा के ऐतिहासिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।

संस्कृत	**मीडी**	**फारसी**	**यूनानी**	**लैटिन**	**अंग्रेजी**	**हिन्दी**
पितृ	पतर	पिदर	पाटेर	पेटर	फादर	पिता
मातृ	मतर	मादर	माटेर	मेटर	मदर	माता
भ्रातृ	व्रतर	ब्रादर	फ्राटेर	फ्राटर	ब्रदर	भाई
दुहितृ	दुग्धर	दुख्तर	थिगाटेर		डाटर	घी
एक	यक	यक	हैन	टन	वन	एक
द्वि, दौ	द्व	दू	दुआ	डुओ	टू	छो
तृ	थृ	*	ट्ट	ट्ट	थ्री	तीन
नाम	नाम	नाम	ओनोमा	नामेन	नेम	नम
अस्मि	अह्मि	अम	ऐमी	सम	ऐम	हूँ
ददामि	दधामि	दिहम	डिडोमी	डिडोमी	*	देऊँ

पहले भाग के लोगों ने ईरान में मीडी (मादी) भाषा के द्वारा फारसी को जन्म दिया और दूसरे भाग के लोगों ने संस्कृत का प्रचार किया जिससे प्राकृत के द्वारा प्रचलित आर्य भाषाएं निकली हैं। प्राकृत के द्वारा संस्कृत से निकली हुई इन्हीं भाषाओं

में से हिन्दी है।

इस तालिका से जान पड़ता है कि निकटवर्ती देशों की भाषाओं में अधिक भिन्नता है। यह भिन्नता इस बात की भी सूचक है कि यह भेद वास्तविक नहीं हैं और न आदि में था किन्तु वह पीछे से हो गया है।

3.4 उर्दू का आधुनिक विकास :

इस भाषा के हजारों से भी अधिक शब्द हिन्दी में घुल मिल कर इसकी खूबसूरती बढ़ा रहे हैं। रोज काम आने वाले ऐसे कुछ शब्द हैं–

उर्दू शब्द	**हिन्दी शब्द**
अखबार	समाचार, समाचार पत्र, सामयिक पत्र।
आवाज	शोर, ध्वनि, चीख, पुकार, घोष, कोलाहल।
आराम	विश्राम, सुख, चैन, सुगमता।
अन्दर	भीतर।
अफसोस	शोक, पछताना, उदासी, दुःख, पीढ़ा, पश्चाताप।
आदत	रीति, आचरण, प्रयोग, प्रवृत्ति।
इंकलाब	क्रान्ति।
इमारत	भवन, निर्माण, सदन।
गजल	कविता।
जवान	युवा, किशोर। इत्यादि

3.5 उर्दू का हिन्दी से साम्य एवं विभेद :

भाषाविद् हिंदी एवं उर्दू को एक ही भाषा मानते हैं। हिन्दी देवनागरी लिपि में और शब्दावली के स्तर पर अधिकांशतः संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करती है। **उर्दू फारसी लिपि में लिखी जाती है** और शब्दावली के स्तर पर उस पर फारसी और अरबी भाषाओं का प्रभाव अधिक है।

व्याकरणिक रूप से उर्दू और हिंदी में लगभग शत–प्रतिशत समानता है– केवल कुछ विशेष ध्वनियाँ उर्दू में अरबी और फारसी से ली गयी हैं और इसी प्रकार फारसी और अरबी की कुछ विशेष व्याकरणिक संरचना भी प्रयोग की जाती है। अतः **उर्दू को हिन्दी की एक विशेष शैली माना जा सकता है।**

प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने अपने ''हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत'' शीर्षक आलेख में हिन्दी एवं उर्दू की भाषिक एकता का प्रतिपादन किया है। साथ ही हिन्दी साहित्य एवं उर्दू साहित्य के अलगाव के कारणों को भी स्पष्ट किया है। (Webliography)

प्रोफेसर जैन के अनुसार ''हिन्दी–उर्दू के 'ग्रामर' में कोई अन्तर नहीं है। अपवाद स्वरूप सम्बन्धकारक चिन्ह तथा बहुवचन प्रत्यय को छोड़कर। हिन्दी के उपभाषाओं, बोलियों, व्यावहारिक हिन्दी, मानक हिन्दी में बोला जाता है– 'गालिब का दीवन।' उर्दू की ठेठ स्टाइल में कहा जाएगा– 'दीवाने गालिब।' हिन्दी में मकान का अविकारी कारक बहुवचन वाक्य में 'मकान' ही बोला जाएगा। 'उसके तीन मकान।' उर्दू में 'मकान' में 'आत' जोड़कर बहुवचन प्रयोग किया जाता है–'मकानात।' विकारी कारक बहुवचन वाक्य में प्रयोग होने पर हिन्दी–उर्दू में 'ओ' जोड़कर 'मकानों' ही बोला जाता जाएगा। 'मकानों को गिरा दो।'– यह प्रयोग हिन्दी में भी होता है तथा उर्दू में भी। कुछ शब्दों का प्रयोग हिन्दी में स्त्रीलिंग में तथा उर्दू में पुल्लिंग में होता है। हिन्दी में 'ताजी' खबरें तथा उर्दू में 'ताजा खबरे' इस प्रकार का अन्तर 'पश्चिमी–हिन्दी' तथा 'पूर्वी– हिन्दी' की उपभाषाओं में कई शब्दों के प्रयोग में मिलता है। इनको छोड़कर

हिन्दी उर्दू का ग्रामर एक है। चूँकि इनका ग्रामर एक है इस कारण हिन्दी– उर्दू भाषा की दृष्टि से एक है। इसलिए बोलचाल में दोनों में फर्क नहीं मालूम पड़ता।

'साहित्यिक भाषा' में भाषा के अलावा अन्य बहुत से तत्व होते हैं। साहित्य में कथानक होता है वहाँ किसी की किसी से उपमा दी जाती है, अलंकृत शैली (आरनेट स्टाइल) होती है। एक भाषा–रूप से **''हिन्दी–उर्दू' की दो साहित्यिक शैलियाँ विकसित हुईं। एक शैली 'आधुनिक हिन्दी–साहित्य' कहलाती है।** जिसमें भारतीय प्रतीकों, उपमानों, बिम्बों, छन्दों तथा संस्कृत की तत्सम एवं भारत के जनसमाज में प्रचलित शब्दों का प्रयोग होता है तथा जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। **उर्दू स्टाइल के अदबकारों ने अरबी एवं फारसी साहित्य में प्रचलित प्रतीकों, उपमानों, बिम्बों, छन्दों का अधिक प्रयोग किया।** जब अरबी–फारसी अदब की परम्परा के अनुरूप या उससे प्रभावित होकर साहित्य लिखा जाता है तो रचना में अरबी साहित्य तथा फारसी साहित्य में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का बहुत प्रयोग तो होता ही है उसके साथ–साथ शैलीगत उपादानों तथा लय और छंद में भी अंतर हो जाता है जिससे रचना की जमीन पर और आसमान बदले–बदले नजर आने लगते हैं। यदि कथानक रामायण या महाभारत पर आधारित होते हैं तो 'रचना वातावरण' एक प्रकार का होता है यदि कथानक 'लैला–मजनू' 'युसुफ–जुलेखा', शीरी–फरहाद की कथाओं पर आधारित होते हैं तो 'रचना–वातावरण' दूसरे प्रकार का होता है।

उपमा 'कमल' से या चाँद से दी जाती है तो पेड़ की एक शाखा पर जिस रंग और खुश्बू वाले फूल खिलते हैं, उससे भिन्न रंग और खुश्बू वाले फूल पेड़ की दूसरे शाखा पर तब खिलने तब खिलने लगते हैं जब उपमान 'आबे जमजम', 'कोहिनूर', 'शमा', 'बुलबुल' आदि हो जाते हैं। बोलचाल में तो 'हिन्दी–उर्दू' बोलने वाले सभी लोग रोट, पानी, कपड़ा, मकान, हवा, दूध, दही, दिन, रात, हाथ, पैर, कमर, प्यार, प्यार, नींद, सपना आदि शब्दों का समान रूप से प्रयोग करते हैं मगर जब 'चाँद लगा' के लिए एक शैली के साहित्यकार 'चन्द्र उदित हुआ' तथा दूसरी शैली के अदबकार

'माहताब उरूज हो गया लिखने लगते हैं तो एक ही भाषा–धारा दो भिन्न प्रवाहों में बहती हुई दिखाई पड़ने लगती है। जब साहित्य की भिन्न परम्पराओं से प्रभावित एवं प्रेरित होकर लिखा जाता है तो पानी की उन धाराओं में अलग–अलग रंगों का पानी बना देते हैं।''

3.6 हिन्दी-उर्दू विवाद : उर्दू विवाद

भाषा परिवर्तन की स्थिति	
फारसी का विकल्प	1837
हिन्दी और उर्दू को बराबरी का दर्जा	1900
उर्दू पाकिस्तान में एक मात्र राष्ट्रीय भाषा घोषित	1948
हिन्दी को विशेष दर्जा प्राप्त हुआ और भारतीय गणतंत्र में इसे उर्दू एवं अन्य भाषाओं से ऊपर राजभाषा का दर्जा मिला	1950

19वीं सदी में हिन्दी उर्दू विवाद आरम्भ हुआ जो एक भाषाई विवाद है। इस विवाद के अनुसार उर्दू और हिन्दी को एक भाषा का दर्जा दने और उत्तर एवं उत्तर पश्चिमी भारत में एक मानक भाषा के रूप में निर्मित किया जाना चाहिए। यद्यपि यह विवाद अधिकारिक रूप से 1950 में भारत सरकार द्वारा हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के बाद आरम्भ हुआ। वर्तमान समय में कुछ मुस्लिमों के अनुसार हिन्दुओं ने उर्दू को परित्यक्त किया जबकि कुछ हिन्दुओं का विश्वास है कि मुस्लिम राज के दौरान उर्दू को कृत्रिम रूप से जनित किया गया।

हिन्दी और उर्दू हिन्दी भाषा की खड़ी बोली के दो भिन्न साहित्यक रूप हैं। खड़ीबोली का एक फारसीकृत रूप जो विभिन्नता से हिन्दी, हिन्दुस्तानी और उर्दू कहलाता था, दक्षिण एशिया के दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई0) और मुगल सल्तनत (1526–1858 ई0) के दौरान आकार लेने गली ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने आधुनिक भारत के **हिन्दी लिपि में लिखित उर्दू को सरकारी मानक भाषा का दर्जा दे दिया।**

उन्नीसवीं सदी के आखिरी चंद दहाइयों में उत्तर पश्चिमी प्रातों और अवध में हिन्दी उर्दू विवाद का प्रस्फुटन हुआ, हिन्दी और उर्दू के समर्थक क्रमशः देवनागरी और फारसी लिपि में लिखित हिन्दुस्तानी की हिमायत जो कर कर रहे थे। हिन्दी के आन्दोलन जो देवनागरी का विकास और अधिकारिक दर्जे को हिमायत दे रहे थे उत्तरी हिन्द में स्थापित हुए। बाबू शिवप्रसाद और मदन मोहन मालवीय इस आन्दोलन के आरम्भ के उल्लेखनीय समर्थक थे। इसके नतीजे में उर्दू आन्दोलनों का निर्माण हुआ, जिन्होंने उर्दू के अधिकारिक दर्जे को समर्थन दिया, सैयद अहमद खान उनका एक प्रसिद्ध समर्थक था।

सन् 1900 में सरकार ने हिन्दी और उर्दू दोनों को समान प्रतीकात्मक दर्जा प्रदान किया। जिसका मुस्लिमों ने विरोध किया और हिन्दुओं ने खुशी व्यक्त की। हिंदी और उर्दू का भाषायी विवाद बढ़ता गया क्योंकि हिंदी में फारसी व्युत्पन्न शब्दों के तुल्य औरपचारिक और शैक्षिक शब्दावली का मूल संस्कृत को लिया गया। इससे हिंदू–मुस्लिम मतभेद बढ़ने लगे और महात्मा गांधी ने मानकों का पुनः शुद्धिकरण करके पारम्परिक शब्द हिन्दुस्तानी के अन्दर उर्दू अथवा देवनागरी लिपि काम में लेने का सुझाव दिया। इसका कांग्रेस के सदस्यों तथा भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल कुछ नेताओं ने समर्थन किया। इसके फलस्वरूप 1950 में भारतीय संविधान के लिए बनी संस्था ने अंग्रेजी के साथ उर्दू के स्थान पर हिन्दी को देवनागरी लिपि में राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

3.7 उर्दू भी हमारी हिन्दी भी हमारी :

जो लोग **उर्दू को मुस्लिमों की और हिंदी को हिन्दुओं की भाषा मानते हैं न केवल व संकीर्णतावादी हैं बल्कि उग्रवादी है** क्योंकि इन दोनों भाषाओं में जो समता व समानता है, वह न तो उर्दू व फारसी में है और न ही संस्कृत और हिन्दी में। **एक समय जब न तो उर्दू थी और न ही हिन्दी थी तो उस बोली को 'हिन्दवी' कहा जाता था।** इसे फिर 'रेख्तां' का नाम भी दिया गया। वैसे मुनव्वर राना ने भी क्या खूब कहा है ''लिपट जाता हूँ माँ से और मौसी मुस्कुराती है, मैं उर्दू में गजल कहता हूँ हिन्दी मुस्कुराती है।''

पिछले तीन वर्षों से हिन्दी व उर्दू वालों के संबंध में एक बड़ा रोचक और खुशगवार बदलाव आया है 'जश्न–ए–रेखा' यह एक ऐसा जश्न है जिसने न केवल उर्दू –हिन्दी भाषाओं को एक सिलसिले में पिरोया है बल्कि हिन्दुओं और मुसलमानों को भी जोड़ा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसने दिलों को जोड़ा है।

इस जश्न से पूर्व भाषाओं के मेले प्रायः वीरान और नीरस हुआ करते थे मगर शाबाशी देनी होगी हमें उर्दू के प्रशंसक और हिंदी के हितैषी ''संजीव सराफ'' को जिन्होंने इन भाषाओं में ऐसी जान फूंकी कि लोग अन्य सभी मनोरंजनों को भूल तीनों दिन यहीं गुजारते हैं वास्तविकता तो यह है कि उर्दू व हिंदी इतनी घुल मिल गई है कि उनकी भिन्नता ही लगभग सिवाय लिपि के समाप्त हो चुकी है जिसका उदाहरण हमें प्रो0 क्लीम कैंसर इन पंक्तियों में मिलता है। 'जबान–ए–यार समझने को घुन में कैसर, जो अपने पास थी वह भी जबान भूल गये।'

इसका अर्थ यह है कि हिन्दी–उर्दू भाषाओं का मिलन इतना खूबसूरत होता है कि हम अपनी भाषा भूलकर एक रंगीन प्यार की भाषा बोलने लगते हैं।

चतुर्थ अध्याय : उर्दू शिक्षण का स्वरूप

4.1 *उर्दू शिक्षा का परम्परागत स्वरूप :*

4.1.1 मुस्लिम काल में : मुस्लिम काल में **उर्दू शिक्षा के दो प्रमुख केन्द्र मकतब और मदरसे** माने जाते थे। इनके अतिरिक्त **खानकाहों और दरगाहों में भी प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी।** इन शिक्षा संस्थाओं में केवल मुसलमान बच्चे ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे **'बिस्मिल्लाह खानी'** रस्म के बाद ही बालक अपनी **शिक्षा आरम्भ करता है** यह रस्म 4 साल, 4 माह, 4 दिन की अवस्था में होता था। मौलवी साहब कुरान शरीफ की आयतें पढ़ते थे और बालक से उनको दोहरवाते थे। मकतबों में शिक्षण विधि मौखिक और प्रत्यक्ष थी। बालक को शुद्ध उच्चारण का ज्ञान हो जाने के बाद कलमा और कुरान की कुछ आयतें कण्ठस्थ करनी पढ़ती थीं। (परिशिष्ट–ग)

4.1.2 वर्तमान काल में : वर्तमान काल में **उर्दू शिक्षा मुख्यतः मदरसों एवं मस्जिदों** में

प्रदान की जाती है। मस्जिदों में शिक्षा ग्रहण व प्रादन करने की कुछ विशेषताएं हैं जो निम्नलिखित हैं–

- उम्र की कोई पाबन्दी नहीं होती।
- सबसे पहले उर्दू (अरबी) वर्णमाला (अरबी हर्फ) का ज्ञान कराया जाता है। (परिशिष्ट–द)
- जिसमें एराब (जबर, जेर, पेश) मात्राओं का ज्ञान कराया जाता है। (जैसे–अब, रिन, जून)
- हर्फ को जोड़ना बताया जाता है। (जैसे–अ+ब = अब)
- तदुपरान्त यस्सरनल कुरान पढ़ाते हैं। (जैसे–कुरान को छोटे–छोटे भागों में बांटकर पढ़ाना)
- सर्वप्रथम तीसवां पारा (कुरान का आखिरी हिस्सा) पढ़ाया जाता है इसमें छोटी–छोटी सूरतें हैं जिनका ज्ञान कराया जाता है।
- फिर कुरान में पहले हिस्से से शुरूआत की जाती है तथा साथ में उर्दू का लिखना–पढ़ना चलता रहता है।
- बालक कुरान को लगभग 2 वर्ष में सीख जाता है।
- कुरान में 30 पारा (भाग) हैं।
- कुरान किसी के द्वारा रचित नहीं है यह 23 वर्ष में एकत्र हुआ।
- जो पूरा कुरान कण्ठस्थ कर लेता है उसे हाफिज कहते हैं।
- हाफिज बनने के बाद छात्र कुरान सुनाने के लिए घरों में आमन्त्रित किये जाते

हैं।

जैसे– हिन्दू धर्म में भागवतवाचक।

डा. एफ.ई. केई के अनुसार – ''सभी मुसलमान बालकों से प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने की आशा की जाती थी, ताकि वे अपने प्रतिदिन के धार्मिक कार्यो से सम्बन्धित कुरान की आयतों को स्मरण कर लें। किन्तु इस बात को निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि सभी बालक इस शिक्षण को प्राप्त करते थे।'' (पाठक–पी.डी. पृ. 41)

4.2 उर्दू शिक्षा का औपचारिक स्वरूप :

डॉ0 एफ0ई0 केई ने लिखा है– ''मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली है, जिसका भारत में प्रतिरोपण किया गया और जो ब्राह्मणीय शिक्षा से अति अल्प सम्बन्ध रखकर, अपनी प्राचीन भूमि में विकसित हुई।'' (पाठक–पी.डी. पृ. 42)

औपचारिक स्वरूप के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के मदरसे शामिल किए जाते हैं जो उच्च शिक्षा के केन्द्र माने जाते हैं तथा मदरसा को हम अपने शब्दों में इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं–

4.2.1 मदरसा : ''मदरसा'' शब्द की उत्पत्ति, अरबी भाषा के दरस शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है– ''भाषण'' (A Lecture)। इस प्रकार **मदरसा वह स्थान है, जहाँ शिक्षण के लिए भाषण या व्याख्यान–विधि का प्रयोग किया जाता है।** इनकी स्थापना–राज्य और धनी विद्याप्रेमियों द्वारा की जाती थी इनमें विभिन्न शिक्षकों द्वारा विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। **शिक्षा का माध्यम फारसी**

था।

4.2.2 मदरसा शिक्षा पद्धति :

मदरसा शिक्षा पद्धति मूलतः **इस्लामी शिक्षा पर आधारित है।** आम स्कूलों का पाँचवां वर्ग यहाँ तन्तनिया और आठवां वर्ग वस्तानिया क्रमशः यह और दूसरा वर्ग है। तीसरा वर्ग फौकनिया हाईस्कूल चौथा वर्ग मौलवी इण्टरमीडिएट के समकक्ष है।

इसी प्रकार **आलिम स्नातक के बराबर** और **फाजिल स्नाकोत्तर एम.ए. की शिक्षा** के समकक्ष है। कुल मिलाकर आठ वर्षों में एम.ए. की शिक्षा पूरी होती है। बी.ए., एम.ए. की शिक्षा अवधि दो–दो वर्षों की है। (**उपाधियाँ** डिग्रियाँ) **देते समय दस्तार (पगड़ी) बांधने की परम्परा है।**

यहाँ एक बुनियादी सवाल यह खड़ा होता है कि क्या मदरसा शिक्षित डिग्रीधारी अपनी कौम को विकासशील नेतृत्व उपलब्ध करा रहे हैं? और क्या इस्लामी प्रचार–प्रसार का काम प्रतिरक्षा और विकास दोनों मोर्चों पर मुसलमानों के जीविकोपार्जन या रोजगार की समस्या को हल कर पा रहा है।

इरशाद आलम रहमानी के शब्दों में एक अध्ययन के अनुसार औसतन 3000 छात्र मैट्रिक से मदरसा तक की बी.ए. डिग्रियां लेकर प्रतिवर्ष, जब रोजगार की तलाश में सड़क पर निकलते हैं तो उन्हें कहीं किसी मुल्क में उम्मीद की कोई किरण नहीं दिखाई देती। 1970–71 से यह सिलसिला ऐसा ही चल रहा है।

मदरसा शिक्षा पद्धति, मुसलमानों की इस गिरती हुई स्थिति में सुधार नहीं कर पा रही। आखिर क्यों ?

4.3 उर्दू शिक्षा के संस्थान :

भारत में में मुस्लिम संस्थान स्थापित हैं। यहां मुसलमानों द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित

संस्थानों की सूची दी जा रही है।

4.3.1 उर्दू शिक्षा के आधुनिक विश्वविद्यालय और संस्थान-

i- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (1875)

ii- अंजुमन–ए– इस्लाम, मुम्बई

iii- एरा लखनऊ मेडिकल कॉलेज, लखनऊ

iv- जमाल मोहम्मद कॉलेज, त्रिचिरापल्ली

v- दार–उस–सालम एजुकेशन ट्रस्ट

vi- जामिया मिलिया इस्लामिया

vii- हमदर्द विश्वविद्यालय

viii- अल–बरकात शैक्षिक संस्थान, अलीगढ़

ix- मौलाना आजाद एजुकेशन सोसाइटी, औरंगाबाद

x- डॉ0 रफीक जकारिया कैम्पस, औरंगाबाद

xi- अल अमीन एजुकेशनल सोसाइटी

xii- क्रेसेन्ट इंजीनियरिंग कॉलेज

xiii- अल–कबीर शैक्षिक कॉलेज

xiv- दारूल उलूम देवबंद

xv- दारूल उलूम नडवातुल उलामा

xvi- इंटीग्रल विश्वविद्यालय

xvii- इब्न सिना अकादमी ऑफ मिडियावल मेडिसीन एंड साइंस

xviii- नेशनल कॉलेज ऑफ इंजीनरिंग, तिरूनलवेली

xix- अल फलाह स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, फरीदाबाद

xx- दारूल हडा इस्लामी विश्वविद्यालय उस्मानिया विश्वविद्यालय

xxi- जामिया निजामिया

xxii- मुस्लिम एजुकेशनल एसोसिएसन ऑफ साउदर्न इंडिया

4.3.2 पारम्परिक इस्लामी विश्वविद्यालय :

i- मर्कजु **सकफाठी** सुन्निया, केरल

ii- जामिया दारूल हुडा इस्लामिया

iii- रजा अकादमी

4.3.3 उत्तर प्रदेश में उर्दू डिग्री के संस्थान :

	संस्थान	संचालित कोर्स
i-	अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (AMU)	B.A. (Hons)
ii-	चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ	M.Phil, M.A.
iii-	हमिदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद	B.A.
iv-	शिया पी.जी. कॉलेज, लखनऊ	B.A. , M.A.
v-	हिन्दू कॉलेज, बरेली	B.A , M.A.
vi-	एविंग क्रिस्चियन कॉलेज, इलाहाबाद	B.A.
vii-	नंदिनी नागर महाविद्यालय, नवाबगंज	B.A.
viii-	क्रिस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर (1866)	B.A.
ix-	सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा (1850)	M.A.

x-	सेंट एण्ड्रू कॉलेज, गोरखपुर	
xi-	लखनऊ क्रिस्चियन डिग्री कॉलेज, लखनऊ	B.A
xii-	शिव सावित्री महाविद्यालय, फैजाबाद	B.A
xiii-	महात्मा गांधी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फिरोजाबाद (2002)	B.A, M.A.
xiv-	जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट, बाराबंकी (1964)	B.A
xv-	यूनिटी डिग्री कॉलेज, रामपुर (2014)	B.A
xvi-	हालिम मुस्लिम पी.जी. कॉलेज, कानपुर (1959)	B.A
xvii-	मुमताज पी.जी. कॉलेज, लखनऊ (1974)	B.A
xviii-	वसन्ता कॉलेज फॉर वूमेन, वाराणसी (1913)	B.A
xix-	राना प्रताप पी.जी. कॉलेज, सुल्तानपुर (1971)	B.A
xx-	महिला विद्यालय पी.जी. कॉलेज, लखनऊ (1952)	B.A

उपर्युक्त संस्थानों का विवरण देने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि उत्तर प्रदेश में 20 ऐसे संस्थान हैं जहाँ से इच्छुक विद्यार्थी उर्दू विषय में डिप्लोमा ग्रहण कर सकता है अतः हम अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का स्पष्ट विवरण अग्रलिखित दे रहे हैं। (Webliography viii)

4.4 *अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी–* (AMU) :

''तालीम का दरिया है एएमयू''

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) ऐसी बुलंदी का नाम है जिसकी तारीफ में अल्फाज भी कम पड़ जाते हैं 141 बरस पहले इसकी नींव एक मदरसे के रूप में पड़ी थी। तब सिर्फ छः छात्र थे अब एएमयू में 25 हजार छात्र है। 13 संकाय, 111 विभाग और 350 डिग्री–सर्टिफिकेट कोर्स चल रहे हैं। 10 हजार छात्र कैंपस में ही रहते हैं। इनमें 3000 छात्राएं भी हैं। धार्मिक सद्भाव के लिए इंट्राफेट डायलॉग सेंटर खुला है। 8 विदेषी भाषाएं भी पढ़ाई जा रही हैं। कैंपस का दायरा दिनोंदिन बढ़ रहा है। आज **मल्लापुरम (केरल), विशनगंज (बिहार), मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल) में स्टडी सेंटर** चल रहे हैं। प्रदेश भर में स्कूल खोलने की तैयारी है शुरूआत मुजफ्फरनगर से होगी। एएमयू ने हजारों शख्सियत पैदा की है। देश के **तीसरे राष्ट्रपति जाकिर हुसैन हों** या मौजूदा **उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी,** सब यहीं की देन हैं। **इसी सरजमीं से 18 राज्यपाल, 17 मुख्यमंत्री, और 12 देशों के राष्ट्राध्यक्ष निकल चुके हैं।** सर सैय्यद के चयन में दो भारत रत्न (खान अब्दुल गफ्फार खान व जाकिर हुसैन) खिले तो सुप्रीम कोर्ट के चार (4) और हाईकोर्ट के 47 जज भी। **छः पद्मविभूषण, नौ पद्मभूषण और 53 पद्मश्री भी पाने वाले यहीं के हैं।**

देश–विदेश के 75 यूनिवर्सिटी के कुलपति भी यहीं से पढ़कर निकले तो सेना के 40 से अधिक अफसर, नेशनल साइंस अकादमी के 28 वैज्ञानिकों समेत हजारों शिक्षक भी। **जेनेवा में ब्रह्माण्ड की खोज में जुटी महाप्रयोगशाला में भी एएमयू के कई**

वैज्ञानिक शामिल हैं। चंद्रयान विशन हमारे बगैर अधूरा है और गंगा–यमुना की सफाई। तालीम के ऐसे दरिया प्रत्येक व्यक्ति डुबकी लगाना चाहता है।

मदरसा छात्रों के लिए :

एएमयू संभवतः देश का पहला विश्वविद्यालय है जहाँ मदरसों के छात्रों के लिए ब्रिज कोर्स शुरू किया है। मदरसे से शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र व छात्राओं को सशक्त बनाने के लिए नया कोर्स शुरू किया गया है जिसको पूर्ण करके व छात्र विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेज में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

नैनो तकनीक में क्रान्तिकारी शोध :

किसी भी संस्था की पहचान उसके शोध कार्यों से होती है। शोध कार्यों में एएमयू भी पीछे नहीं हैं। यहाँ नैनो तकनीक में हुए शोध क्रान्ति आने का दम भरते हैं .

ये भी हैं खास शोध :

❖ फल–सब्जियों की उम्र एक महीने से ज्यादा बढ़ाई।
❖ नैनों कैल्शियम तैयार किया गया।
❖ कैंसर कोशिकाओं की पहचान के लिए प्याज में तत्व की खोज।
❖ कूड़े से बायो ईंधन बनाने की तकनीक।
❖ खास पौधे की पत्तियों से ग्रफीन नाम का पदार्थ तैयार। इसमें कैंसर कोशिकाओं का विघटन रोकने में मदद मिलेगी।
❖ बी.एस.यू. के सहयोग से झुलसा रोग का इलाज खोजा।
❖ भाभा एटमिक रिसर्च सेंटर के सहयोग से समुद्री घास से स्प्रे तैयार करना। इससे मेंथा की पैदावार बढ़ेगी।

13.50 लाख किताबों का खजाना :

एएमयू की मौलाना आजाद लाइब्रेरी ज्ञान का समुद्र है। यहाँ 13.50 लाख किताबों के साथ तमाम दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ भी हैं।

- 1877 में लाइब्रेरी की स्थापना।
- यहाँ रखी 'इंडेक्स इस्लामिक्स' की कीमत 12 लाख रूपये।
- फारसी पांडुलिपि का 'कैटलॉग'।
- 1600 ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन।
- साढ़े चार लाख दुर्लभ पुस्तकें, पांडुलिपियां व शोध पत्र ऑनलाइन।
- 1829 में अकबर के दरबारी फैजी की फारसी में अनुवादित गीता।
- 400 साल पहले फारसी में अनुवादित महाभारत की पांडुलिपि।
- तमिल भाषा में लिखे भोजपत्र।
- 1400 साल पुरानी कुरान।
- मुगलशासकों के कुरान लिखे विशेष कुर्ते, जिन्हें रक्षा कवच कहते हैं।

- सर सैय्यद की पुस्तकें व पाण्डुलिपियाँ।
- जहाँगीर के पेंटर मंसूर नक्कास की अद्भुत पेंटिंग टूलिप।

(Webliography-22)

4.5 बाँदा में स्थित जामिया अरबी हथौड़ा विश्वविद्यालय :

जैसा कि हमने उ0प्र0 में स्थित विभिन्न प्रकार के उर्दू शिक्षण संस्थाओं का अध्ययन किया जिनमें से उत्तर प्रदेश में स्थित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU) का गहन अध्ययन किया। इसी प्रकार हमारे बाँदा जिले में स्थित हथौड़ा विश्वविद्यालय बहुत ही विख्यात विश्वविद्यालय है जो उर्दू के अनेक कोर्स संचालित करता हैं। अतः हम हथौड़ा विश्वविद्यालय की शैक्षिक उपलब्धियों का निम्नलिखित रूप में अध्ययन करेगें–

विश्वविद्यालय का नाम : जामिया अरबी हथौड़ा (बाँदा)

स्थापना वर्ष : सन् 1952 ई0

संस्थापक (बानी)	: हजरत मौलाना कारी सैय्यद सिद्दीक अहमद
प्रबन्धक (नाजिम)	: मौलाना कारी सैय्यद हबीब अहमद।
अध्यक्ष	: मौलाना मुफ्ती नजीब अहमद
हॉस्टेल व्यवस्था	: केवल लड़कों के लिए
शिक्षा व्यवस्था	: सहशिक्षा
शुल्क	: निःशुल्क
दाखिला	: 2700 बच्चे

शैक्षिक उपलब्धियाँ

मौलवी : यह प्राइमरी की शिक्षा है जिसकी अवधि 5 वर्ष है जिसमें 300 बच्चों का दाखिला है।

हाफिज : 3 वर्ष तक कुरान कण्ठस्थ करने वाला विद्यार्थी

कारी : इसकी अवधि 3 वर्ष की होती है। तथा इस विश्वविद्यालय में 5 वर्ष अवधि है जिसे ग्रहण कर विद्यार्थी मौलाना कहलाता है।

मुफ्ती : आलिम करने के बाद। 1 वर्ष अवधि के लिए। जिससे विद्यार्थी स्नातक हो जाता है।

अदब : तखस्सुस फिल अदब जिसे हम अपनी भाषा में (Ph.D) कहते हैं। इसकी अवधि 1 वर्ष है।

तदरीबुल मुअल्लिमी : यह एक प्रशिक्षण डिग्री है जो B.Ed के समकक्ष मानी जाती है।

(Webliography-21)

4.6 उर्दू एजुकेशन बोर्ड

Declard by National commission for ninority education institutious.

Gov of India

Courses run by Urdu education board 8th Standard.

Duration- 1 year

Eligibility – Minimum 14 year fo age

Secondary (10th Standard)

Duration- 1 year

Eligibility – Formal Qualification is not required for secondary level course only the candidate nust have attend minimum age of 14 yrs

Senior secondary (12th standard)

Senior Secondary Course has been divided into three streams : Arts, commerce and Science.

Urdu teaching course (UTC)

Duration – 2 yrs

Eligibility – senior Secondary

Diploma in mass communication T.V. Journalism in Urdu (DMCTJ)

Duration- 1 Years

Eligibility – Senior Secondary.

पंचम अध्याय :

5.1 यू0पी0 बोर्ड की उर्दू पाठ्य पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन :

शोधकर्त्री द्वारा यू0पी0 बोर्ड की उर्दू पाठ्यपुस्तकों (प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक) आलोचनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें निम्न कमियां पाई गईं–

1. उर्दू शिक्षण की अधिकांश पाठ्य पुस्तकें एवं प्रकरणों में सिर्फ लिखित

सामग्री ही उपलब्ध है उनमें किसी तरह की प्रदर्शनात्मक सामग्री नहीं है।

2. उर्दू शिक्षण की पाठ्य पुस्तकों में सिर्फ अध्याय के बारे में बताया गया है लेखक परिचय नहीं दिया गया है।

ہماری زبان

[پنڈت برج موہن دتاتریہ کیفی (پیدائش ۱۸۶۶ء وفات ۱۹۵۵ء) اردو کے مشہور ادیب اور شاعر تھے۔ نثر میں "کیفیہ" اور "منشورات" ان کی مشہور کتابیں ہیں شاعری میں وہ مولانا حالی کے شاگرد تھے۔ انھوں نے "مسدس حالی" کی طرح ایک مسدس "بھارت درپن" لکھا ہے۔ وہ اردو زبان سے بے پناہ محبت کرتے تھے اور تمام عمر اردو کی خدمت کرتے رہے۔ وہ اردو زبان کو ہندو مسلم اتحاد اور قومی یک جہتی کی زندہ یادگار سمجھتے تھے۔ ذیل کی نظم میں انھیں خیالات کو ادا کیا گیا ہے۔]

اردو ہے جس کا نام ہماری زبان ہے
دنیا کی ہر زبان سے پیاری زبان ہے

فرقوں کے ربط و ضبط کا ہے اس سے انتظام
قومی یگانگی کا ہے قائم اسی سے نام

اردو بنی ہے مسلم و ہندو کے میل سے
دونوں نے صرف اس پہ دماغ اور دل کیے

قوموں کے اتحاد کا یہ شاہ کار ہے
کلچر کا اس کی ذات پہ دارومدار ہے

اس سے ہی ملک میں وہ رواداریاں رہیں
شیخ اور برہمن میں وفاداریاں رہیں

بہناپا اس کو دوسری بھاشاؤں سے رہا
اس نے کسی کو غیر نہ سمجھا کبھی ذرا

اردو ہی دوستوں وطنیت کی جان ہے
یہ یاد رکھو اس سے اخوت کی شان ہے

3. माध्यमिक स्तर की पाठ्य पुस्तकों में न तो अध्याय से सम्बन्धित माने दी गयी है और न ही **''आओ करके सीखें''** क्रिया का उल्लेख किया गया है जिससे छात्रों का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

سچ ہے یا نہیں اوراب بھی ویسے لوگ ہیں یا کوئی نہیں رہا۔

سوالات :-

۱ عبدالرحیم اکبری دربار میں کس طرح پہنچے؟

۲ گجرات کی چڑھائی میں عبدالرحیم کے سپرد کیا خدمت تھی؟

۳ شہنشاہ اکبر نے عبدالرحیم کو کب اور کس خدمت کے صلے میں خانِ خاناں کا خطاب اور پنج ہزاری منصب عنایت کیا؟

۴ پنج ہزاری منصب کسے کہتے ہیں۔؟

۵ خانِ خاناں کو کھانا کھلاتے وقت ایک غلام کیوں رویا تھا اور خانِ خاناں نے اس کے ساتھ کیا سلوک کیا؟

مشق

(الف) الفاظ کے معنی بتاؤ۔

اتالق، میراث، منصب، معزولی

(ب) محاوروں کو اپنے جملوں میں استعمال کرو۔

ارماں نکل جانا۔ قدم جمنا

قواعد :-

نیچے دی ہوئی عبارت میں اسم فاعل، اسم مفعول اور حاصل مصدر چن کر اپنی کاپی پر لکھو۔

''بجلی کی چمک اور بادلوں کی گرج سے مرا کلیجہ کانپنے والا نہیں ہے۔ میری بناوٹ میں قدرت نے بڑا ہنر صرف کیا ہے۔ رنج و غم میں گرفتار ہوں لیکن میری ہمت جواب دینے والی نہیں ہے۔ میں ہر حال میں اپنی عزت کا خیال رکھنے والا ہوں۔

4. ... हीं है जिससे वह देखने में आकर्षक नहीं प्रतीत होता है।

[مولانا حالی (پیدائش ۱۸۳۷ء وفات ۱۹۱۴ء) کے بارے میں اس سے پہلے ایک مضمون پڑھ چکے ہو۔ مولانا حالی ملک کے رہنے والوں میں بے لوث خدمت کا جذبہ پیدا کرنا چاہتے تھے۔ اور ان کی نظم ''مٹی کا دیا'' پڑھ کر یہی جذبہ پیدا ہوتا ہے۔]

5. पाठ्य–पुस्तकों का कागज बहुत ही निम्न स्तरीय का है जो शिक्षण को अप्रभावी बनाती है।

6. यू0 पी0 बोर्ड उर्दू शिक्षण की पुस्तकें (Online) ऑनलाइन उपलब्ध नहीं है।

7. पाठ्य–पुस्तकों में अभ्यास प्रश्न सुव्यस्थित नहीं है जो उर्दू शिक्षण को

چھوڑو افسردگی کو جوش میں آؤ　　بس بہت سوئے اٹھو ہوش میں آؤ
قافلے تم سے بڑھ گئے کوسوں　　رہے جاتے ہو سب سے پیچھے کیوں
قافلوں سے اگر ملا چاہو　　ملک اور قوم کا بھلا چاہو
گر رہا چاہتے ہو عزت سے　　بھائیوں کو نکالو ذلت سے
قوم کا مبتذل ہے جو انساں　　بے حقیقت ہے گرچہ ہے سلطاں
قوم دنیا میں جس کی ہو ممتاز　　ہے فقیری میں بھی وہ با اعزاز
عزت قوم چاہتے ہو اگر　　جا کے پھیلاؤ ان میں علم و ہنر
ذات کا فخر اور نسب کا غرور　　اٹھ گئے اب جہاں سے یہ دستور
اب نہ سید کا افتخار صحیح　　نہ برہمن کو شدر پر ترجیح
کوئی دن میں وہ دور آئے گا　　بے ہنر بھیک تک نہ پائے گا

گر نہیں سنتے قول حالی کا
پھر نہ کہنا کہ کوئی کہتا تھا

(خواجہ الطاف حسین حالی)

سوالات

۱۔ حالی کی اس نظم سے تم کو کیا پیغام ملتا ہے؟

۲۔ ''تیری اک مشت خاک کے بدلے　　لوں نہ ہرگز اگر بہشت ملے''
اس شعر میں حالی کس کو مخاطب کرتے ہیں؟

۳۔ ''کوئی دن میں وہ دور آئے گا　　بے ہنر بھیک تک نہ پائے گا''
اس شعر میں حالی کیا سمجھانا چاہتے ہیں؟

ہدایت

۱۔ حالی کی یہ نظم بلند آواز سے پڑھو۔

۲۔ استاد سے معلوم کرو کہ مثنوی کسے کہتے ہیں؟

8. पाठ्यपुस्तकों में नवीनतम/आधुनिक सामग्री का अभाव है।

9. पाठ्यपुस्तकें श्वेत–श्याम (Black and White) मात्र हैं।

10. पाठ्य पुस्तकों में संदर्भ का अभाव है।

11. पाठ्यपुस्तकों में संस्करण (Year of publication) का अभाव है।
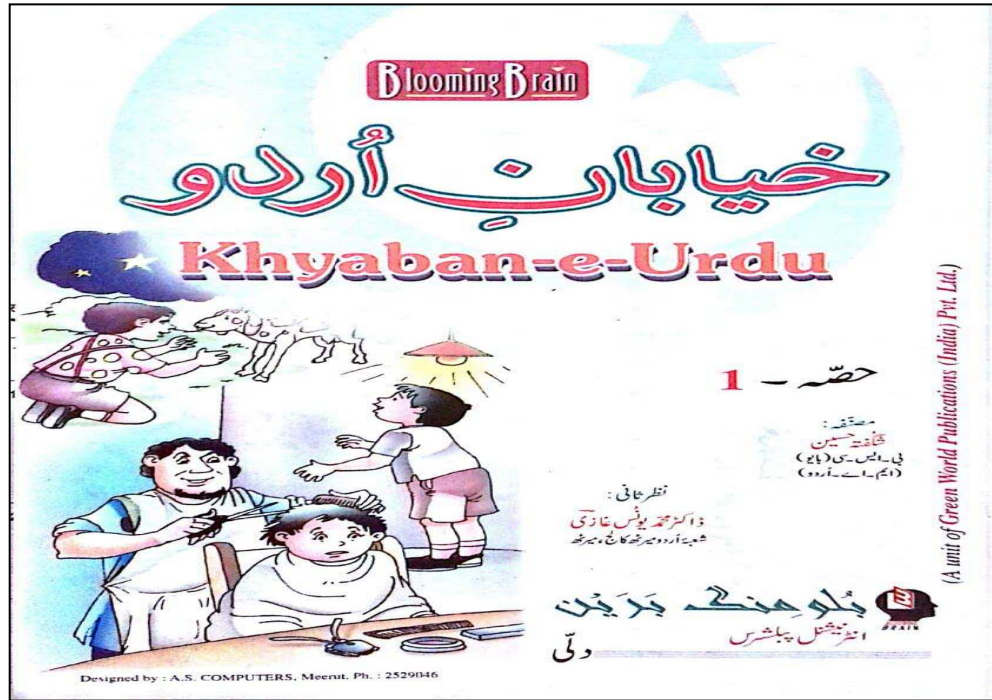
13. पाठ्यपुस्तकों में वेबलिंक (Web-link) एवं क्रियात्क सी.डी. का अभाव है।

5.2 उर्दू की पाठ्य पुस्तकों में सुधार हेतु सुझाव :

शोध कार्य की दृष्टि से इस विषय का पर्याप्त महत्व है क्योंकि शोधकार्य में शोधकर्त्री ने नवीन तथ्यों की वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है तथा सिर्फ यू0पी0 बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों का ही अध्ययन किया है जिसमें सुझाव हेतु निम्नलिखित सुझाव

दिये जा सकते हैं।

- **i-** पाठ्य–पुस्तकों का बाह्य एवं आंतरिक रूप सुन्दर होना चाहिए।
- **ii-** पाठ्य–पुस्तकें सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करें।
- **iii-** पाठ्य–पुस्तकों के लेखकों को छात्रों की मातृभाषा जानना आवश्यक है।
- **iv-** अनुभवी अध्यापकों के पाठों को पुस्तक में स्थान देना चाहिए।
- **v-** पाठ्य–पुस्तकों का कविता भाग छात्रों में सौन्दर्योपासना की भावना भर सकें।
- **vi-** पाठ्य–पुस्तकों का मूल्य इतना कम हो कि सभी छात्र उसे आसानी से खरीद सकें।
- **vii-** पाठ्य–पुस्तकों में लिखित सामग्री के साथ–साथ प्रदर्शनात्मक सामग्री भी उपलब्ध हो जिससे छात्रों को पाठ्यपुस्तकें अपनी ओर आकर्षित कर सकें।
- **viii-** पाठ्य–पुस्तकों की छपाई सरकार स्वयं अपने हाथ में लें।
- **ix-** पाठ्य–पुस्तकों में पाठ से सम्बन्धित माने तथा 'आओ करके सीखें' क्रिया अवश्य होनी चाहिए जिससे छात्रों का मूल्यांकन करने में सरलता हो सके।
- **x-** पाठ्यपुस्तकों की सामग्री धर्मनिरपेक्ष होनी चाहिए। वर्तमान एकांगी सामग्री के सुझाव इस प्रकार हैं–

क्र.	दरजा	प्रकरण	सुझाव
1.	दरजा 1 (परिशिष्ट अ)	अल्ला की शान	इसमें इस कविता के साथ ''सरस्वती वन्दना'' या ''ईश्वर अल्ला तेरे नाम'' ऐसी कोई कविता होनी चाहिए।
2.	दरजा–3 (परिशिष्ट–स)	शाहजहाँ और उसके कारनामें	इस सबक के साथ किसी हिन्दू राजा जैसे ''पेशवा बाजीराव'' आदि पाठ भी सम्मिलित होना चाहिए।

3.	दरजा–4 (परिशिष्ट–द)	डॉक्टर जाकिर हुसैन	इस सबक के साथ–साथ किसी प्रसिद्ध हिन्दू व्यक्तित्व को भी सम्मिलित किया जाता चाहिए। (जैसे–लाल बहादुर शास्त्री/सरदार बल्लभभाई पटेल)
4.	दरजा–5 (परिशिष्ट–य)	ईदुलअजही	इस सबक के साथ किसी हिन्दू त्योहार (जैसे–''दशहरा, दीपावली, होली'' आदि) को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।
5.	दरजा–5 (परिशिष्ट–य)	मुसलमानों की ऐजादात	इस सबक के साथ–साथ ''हिन्दू–आविष्कार'' के बारे में भी एक पाठ होना चाहिए।
6.	दरजा–6 (परिशिष्ट–र)	इकबाल	इस सबक के साथ किसी एक हिन्दू लेखक का (जैसे–''भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, धर्मवीर भारती'' आदि) भी पाठ होना चाहिए।

सारणी 5.1 सुझाावात्मक प्रकरण

षष्ठ अध्याय : उर्दू शिक्षा के आधुनिक आयाम

उर्दू के विभिन्न आयामों का विवरण इस प्रकार हैं-

6.1 उर्दू पत्रिकाएं :

उर्दू की पत्रिकाएं इस प्रकार हैं–

Shair (शायर) : शायर उर्दू भाषा की सबसे पुरानी पत्रिका है जो मुम्बई भारत पर आधारित है। यह आगरा में 1930 में शुरू किया गया था जो प्रसिद्ध कवि सीमाव अकबरावादी द्वारा लिया गया था।

इसके अतिरिक्त उर्दू में प्रकाशित अन्य पत्रिकाओं का विवरण इस प्रकार हैं–

नाम	विवरण	प्रकाशन / वर्ष
अखबार–ए–जहाँ	बच्चों एवं महिलाओं पर आधारित	पाकिस्तान
सस्पेन्स डाईजेस्ट	पकीजा कहानी आधारित है।	कराची, पाकिस्तान (1972)
तलीम–ओ–तरबियत	बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजन पत्रिका	लाहौर (1961)
निदा–ए–मिल्लत	साप्ताहिक अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्रिका	पाकिस्तान
ऑडियो–वीडियो सेटेलाइट	मासिक समाचार पत्रिका	करांची, सिन्ध पाकिस्तान
अनोखी कहानियाँ	बच्चों की उर्दू पत्रिका	करांची, पाकिस्तान (1991)
जदीद अदब	उर्दू साहित्यिक पत्रिका	जर्मनी (1978)
सुपर स्टार डस्ट	मासिक समाचार पत्रिका	करांची, सिन्ध, पाकिस्तान
कम्प्यूटिंग	मासिक पत्रिका	पाकिस्तान (2007)
आंचल मन्थली	उर्दू समाचार पत्र	पाकिस्तान (1965)
दोषीजा डाइजेस्ट	फिक्शन एण्ड वूमेन्स मासिक मैग्जीन	पाकिस्तान (1982)
नया वरक	साहित्यिक पत्रिका	त्रैमासिक प्रकाशन
अमाली साइंस	साइंस मैग्जीन	करांची,पाकिस्तान (1970)
फुनून	उर्दू साहित्यिक पत्रिका	लाहौर, पाकिस्तान (1963)
शबखून	साहित्यिक पत्रिका	1966
मीसाक	उर्दू मासिक पत्रिका	जून 1959
पाकिस्तान पोस्ट	मासिक पत्रिका	करांची, पाकिस्तान

6.2 भारतीय उर्दू समाचार-पत्र :

Neme	Periodic	Publish
Sahafoct	Daily	Lucknow, Mumbai, Delhi, Dehradun
Siasat	Daily	Hyderabad, Bangolore
Urdu Times	Daily	Delhi
Nai Duniya	Weekly	Delhi
Kashmir Uzma	Daily	Srinagar, Jammu
Etemaad	Daily	Hyderabad
Jadid khabar	Daily	Delhi
Hindustan express	Daily	Delhi
Mumbai Urdu News	Daily	Mumbai
Hamara Samaj	Daily	Delhi, Patna
Aurangabad Times	Daily	Aurangabad
Roznama Khabrein	Daily	New Delhi
Akhbar&e&Mashrig	Daily	Delhi, Kolkata, Ranchi
Aag	Daily	Kucknow
Farooqui Tanzeem	Daily	Patna, Ranchi, Delhi
Raabta Times	Daily	Delhi, Muradabad, Bhopal
B B C Urdu	Daily	Delhi
Hind Samachar	Daily	Chandigarh, Jammu, Jalandhar
Roshni	Daily	Shrinagar (J & K)
Jadeed	Weekly	Lucknow
Siyasi Ufucsue	Daily	Delhi, Ranchi
Nrinagar News	Daily	Shrinagar (Local News)
Salar-e-Hind	Daily	Delhi, Lucknow, Dehradun
Abshaar	Daily	Kolkata, west Bengal
Daur-e-Jadeed	Daily	Delhi, Patna, Ranchi

Hakikat Times	Daily	Mazaffarpur, Bihar
Waaris-e-awdh	Daily	Varansi, Barabanki, Luchnow, Faizabad
Mata-e-Akhirat	Daily	Kanpur, Lucknow, Basti, Delhi
Roznama Urdu	Daily	Lucknow, Gorakhpur
Kausi Makam	Daily	Allahabad, Lucknow
Paigam Madre watan	Daily	Delhi
Roznama Asia express	Daily	Aurangabad
Taasin	Daily	Patna, Muzaffar nagar, Delhi, Bangalore, Gangtok, Guwaha, Mumbai, Kolkata
Siyasi Khabar	Daily	Delhi
Masarrat	Daily	Delhi
Mumbai Urdu News	Daily	Mumbai
Darbhangha Times	Weekly	Darbhanga, Bihar
Muslim Duniya	Weekly	Delhi
Kaumi-e-Mail	Daily	Delhi, Jhansi

(Webliogrophy-19)

6.3 उर्दू ब्लॉग्स :

इण्टरनेट पर उर्दू से संबन्धित विभिन्न ब्लॉग्स उपलब्ध हैं जिसकी मदद से शिक्षार्थी अपनी विभिन्न समस्याओं का हल प्राप्त करते हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण उर्दू Blog का विवरण निम्नलिखित है–

क्रमांक	विवरण	**Websites**

1.	Kudibistan इसमें Free Download हेतु किताबें उपलब्ध हैं। जैसे–चार्ल्स शोभराज की सरगुजस्ता नावेल, नक्स–ए–अव्वल ठल डॉ0 अलीम उस्मानी, मुकाल्मत–ए–अफ्लजून, हरक्यूलस और सूनी हीरा, कौमन की असल दौलत, जहन्नुम के पुजारी, औरतजाद, जैसा सोंचो वैसा ही बन जाओ	
2.	Famous Urdu novels सच्ची मोती, मैं तेरी रव्वाबों में हूँ By शैस्ता अजीज, ये इश्क नहीं आसां, हयात हुई महताब, दिल पागल दिल आवारा, सुहान, जासूसी डाइजेस्ट, हजारों रव्वाहिषें ऐसी।	
3.	हजरत दाऊद By असलम राही, ड्रैकुला की वापसी By जान बार्की, इमरान सिरीज By इब्ने सफी सिन्दबाद जेहादी ठल सलीम उर्रहमानी, न्यूयार्क के सौ रंग (उर्दू सफरनामा), शैतानों का शहर।	
4.	बगदाद का ताजिर और बच्चों की अदालत, जंग–ए–अजीम अव्वल, अफरा–तफरी By डॉ0 यूनुस, अफगानिस्तान की दूसरी जंग–ए–आजादी, अक्सा के आंसू, शैतान का दरबार	
5.	खुरासान का अकाब (उर्दू Historical novel), शुला ए उर्दू नावेल By इब्न–ए–अदम, बस इक दाग By उमेरा अहमद, वीराना नावेल By डॉ0 अब्दुर्रब भट्‌टी, तजदीद–ए–वफा By बिल्कीस रियाज, काला जादू, (उर्दू खौफनाक नॉवेल), ताखीर पसन्द By ताहिर जावेद मुगल	
6.	बंगाल, यूनान, मिश्र का काला जादू– Description- A non – fiction book on the origins and practices of black magic in ancient Bengal, Greece and Egypt.	
7.	Jadu Jinnat Se bacchhon ki kitaab.	

8.	मिलते–जुलते 20 तारीखी अनोखे वाकियात, झूठे दज्जाल के फितने, बात से बात, रूह–ए–लियाकत, रशीदी टिकट By अम्रता प्रीतमए माइण्ड मैजिक (Kutubistian, blogspt.com) A	
9.	जुनैद बगदाद, जिन जादू और इंसान, जिनीसयाती मुलालया, कैद–ए–अजम जिन्दगी के दिलचस्प वाकियात, राजपूत हिस्ट्री, रिफातून की तलाश में।	
10.	जबर और जमूरियात, हर्फ हर्फ हकीकत By वासिफ अलजी वासिफ, होमियो मग, मिलियन डॉलर स्पाई By मुस्ताक जादू स्वाबीए तीन अजीम डिक्टेटर, इजराइल क्यूं तस्लीम क्या जाए, डॉ0 अब्दुल कादिर खान, इस्लामिक बाम्ब का खालिक, औरत जिन सी तफरीक और इस्लाम, लंडन प्लैन, दो कौमी नजरिया	
11.	3D स्टूडियो मैक्स By इरफाना यासमीन, तोहफा–ए–दूल्हा, अरब–ओ–हिन्द तालूक, असर–ए–कयामत और फितना–ए–दज्जाल की हकीकत, हज्ज और उमरा, इंग्लिश गुरू, उर्दू हिस्ट्री इंग्लिश, हसन बिन सुबह By अल्मास M.A. साइंस के अजीम मजामीन, मुसलमानों को इन्तेबाह साइन्ड	

6.4 **उर्दू वेबसाइट्स** : उर्दू की बहुत सी महत्वपूर्ण वेबसाइट्स इण्टरनेट पर उपलब्ध है, जिससे विद्यार्थियों अपने विशय के प्रकरणों को समझने में मदद मिलती है। उर्दू की महत्वपूर्ण बेवसाइट्स का विवरण निम्नालिखित हैं–

Sr. No.	विवरण (Description)	Websites

1-	BBC- Urdu Description- Visit BBC Urdu for latest news, videos, audios, features and anaiysis.	
2-	Voice of America- VOA urdu is a news and multi medis service of tha voice of America broad casting to the world feom Washington dc. All content isby voa news.	
3-	Allama IQbal urodu cyber Library- Read urdu books online now on iqbaliyat urdu literature, etc.	
4-	English to urdu dictionary - Translste English wordas , phrases, idioms and techuical terms into urdu by using English to urdu dictionary by google.	
5-	Type in urdu –google Transliteration – Here is tool that will write urdu for you as a text and you can copy and paste the urdu language text any where .	
6-	Urdu Forum – The mission of urdu wed is to bring together urdu speakers and to popularize the use of the urdu on the web .	
7-	Allama Iqbal site – All about Allama IQbal .His work, poetry, prose, Ideas,everything about	

	Allama IQbal.	
8-	send a urdu greeting card with sound and cool urdu text animations . No need to install any fonts. First urdu eid card system using macromedia flash.	www.urdulife.com-
9-	Wikipedia in Urdu An encyclo pedia that anybody can edit.	
10-	Urdu point- The largest urdu website of the world containing dozens of urdu channel including news, cards, poetry, sports, health etc.	

उपर्युक्त वेबसाइट्स के अतिरिक्त उर्दू सम्बन्धी अन्य वेबसाइट्स इस प्रकार हैं– (Webliogrophy-17)

Sr. No.	
11-	First urdu web directory- Forst irdi web dorectory on net. Best Pakistani and and urdu sites. Urdu poetry . newspaper sms pc bbc English dictionary web magazine service quran greetiong cards and more.
12-	Urdufun.com- Onlione naat shrit. Poetry. Computer hardware and software home made beauty tips, jokes travels and more.
13-	Urdupoint.com- The largest urdu web site of the world containing dozens of urdu channels including news, cards, poetry, sports,

	healths etc.
14-	Urdumaza.com – Urdu website having urdu potry jokes mazah humour photogallery islam cooking recipes tips calumns about health news sms to mobilink and u fone. Pakistan best urdu website and the most beautiful one now send sms to mobilink and ufone.
15-	Urdunet.com- Chatting, urdunet chat exclusive rooms for Aligarians and Delhi-wale, current affairs and … thenewsage@urdunet urdunet Discussion n board…
16	Medicinepk.com- Here you can find desirmedies for skin whitening, Beauty tips, health tips, common diseases, aids urdu information for the safety of your family and you.
17-	Liveurdu.com- The most comprehensive and largest portal in urdu language covering topics from urdu poetry. Urdu news, urdu language and more..
18-	Urdu dost.com – An urdu website for the lovers of urdu literature and poetry. It also contains matrimonials ,friends Ship, ecards, photo gallery,free ads. A montlty magzines of urdu literature no plug in required no urdu font required
19-	Urduclassic.com- On of the biggest urdu website of the world which contains a huge collection of urdu literature no plug-in required.
20-	Urdumanzil.com- Pakistan culture information country,Asia.Muslim,islam,Pakistan, Pakistani poets poetry, literature .asian literature asian poetry, asian poets.

6.4.1 उर्दू से सम्बन्धित अन्य वेबसाइट्स :

Apniurdu.com

www.apniurdu.com

jaded adab

www.jadeedadab .com/

Pakistan data management Services

www.Pakdata.com/

Urdupoint.com

www.urdupoint.com

Urduseek.com

www.urduseek.com

urduweb.com

www.urduweb.com

urduword.com

www.urduword.com

urdustan.com

www.urdustan.com//

6.5 ई-बुक्स (**E-Books**) :

वह पुस्तकें जो कि विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होती है तथा पुस्तक प्राप्ति की बेवसाइटों पर हर समय उपलब्ध होती है। उन पुस्तकों से छात्र अपनी आवश्यकता के

अनुसार सामग्री एकत्रित कर सकता है इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक छात्र को घर बैठे ही विभिन्न शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता हो जाती है। ई–बुक्स का प्रयोग विश्व का कोई भी छात्र कर सकता है।

इस सेवा में कुछ पुस्तकें भी उपलब्ध होती हैं जिनको डाउनलोड करने के लिए शुल्क देना होता है तथा कुछ पुस्तकों को निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है इसके माध्यम से छात्रों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा एक ही विषय पर विभिन्न विद्वानों के सुझाव व विचार ई–बुक्स के माध्यम से संकलित किए जा सकते हैं। इस प्रकार ई–बुक्स वर्तमान समय में महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सूचना स्रोत के रूप में कार्य कर रही है। इसके द्वारा छात्रों को शिक्षण सामग्री की उपलब्धता में सहयोग प्रदान करता है।

My Favourite Urdu books

Here is list of my favourite urdu books written by urdu writers.

Sr. No.	Book	Writer
1-	Peer-e-Kamil	Umera Ahmad
2-	Raja Gidh	Bano Qudsia
3-	Shahabnana	Qudratulla shahab
4-	Zaviya-1	Ashfaq Ahmad
5-	Alipur ka Ailee	Mumtaz mufti
6-	Patras kay Mazameen	Poctras Bukhari
7-	Alakh Nogri	Mumtaz Mufti
8-	Baal-e-Jibreel	Muhammad Iqbal
9-	Diwan-e-Ghalib	Mirza Ghalib
10-	Zaviya-2	Ashjaq Ahmad

11-	Nuskha-ha-e-wafa	Faiz ahmad faiz
12-	Shikwa and jawab-i-shikwa	Muhammad Iqbal
13-	Udaas naslain	Abdullah Hussain
14-	Labbaik	Mumtaz Mufti
15-	Zavia-3	Ashfaq ahmad
16-	Muhammad bin Quasim	Naseem Hijazi
17-	Urdu ki Akhri Kitaab	Ibn-e-Insha
18-	Talash	Mumtaz Mufti
19-	Akhri chattan	Naseem Hijazi
20-	Bang-e-Dara	Muhammad Iqbal
21-	Qaisar o Kisra	Naseem Hijazi
22-	Firdaus-e-Bareen	Abdul haleem sharer
23-	Taubat-un-Nasooh	Beputy Nazir Ahmad
24-	Aur Talvaar Tut gae	Naseem Hijazi
25-	God's own land	Shaukat siddioui
26-	Musaddas-e-Hali	Altaf Hussain
27-	Shaheen	Holi Naseem
28-	Zarguzasht	Mushtaq Ahmad
29-	Charagh Talay	Mushtaq Ahmad Yusoofi
30-	Khakam Badahan	Mushtaq Ahmad
31-	Raat	Abdullah Hussain
32-	Nashaib	Abdullah Hussain

33-	Dil darya samandar	Wasif ali wasif
34-	Zarb-e-kaleem	Muhammad Iqbal
35-	Fasana Ajaib	Mirza Rajab
36-	Aab-e-Gum	Mushtaq Ahmad
37-	Ibn-ul-waqt	Nazir Ahmad
38-	Niklay teri talash mein	Mustansar hussain tarar
39-	Baagh	Abdullah Hussain
40-	Al farooq	Shibli Namani
41-	Nadaar Log	Abdullah Hussain
42-	A tali fo four Dervishes	Mir Amman
43-	Babu Nagar	Hussain Ahmad Sherazi
44-	Hairat Kadah	Ashjaq Ahmad
45-	Un Kahi	Mumtaz Mufti
46-	Hayat-e-sadi	Altaf Hussain Holi
47-	Aag ka darya	Qurratulain Hyder
48-	Hind Yatra	Mumtaz Mufti
49-	Ghulam Begh	Mirza Athar Baig
50-	Ghazals of ghalib	Mirza Ghalib
51-	Azadi-e-Hind	Maulana Abul kalam Azad
52-	Rustam o sohrab	Agha Hashr Kashmiri
53-	Toba tek singh	Saadat hasan Manto
54-	Qaid	Abdullah Hussain

55-	Bazm Araiyan	Muhammad Khan
56-	Samay ka bandhan	Mumtaz Mufti
57-	Undalas main Ajnabi	Mustansar Hussain Tarar
58-	Ghubaray	Mumtaz Mufti
59-	Roghani Putlay	Mumtaz Mufti
60-	Guriya Ghar	Mumtaz Mufti
61-	Dastan-e-Amir Hamza	Nawab ali khan
62-	Pyaz key chilkay	Mumtaz Mufti
63-	Jo Miley they Rastay mein	Ahmad Bashir
64-	Allama Iqbal : Selected poetry	Muhammad Iqbal
65-	Basti	Intizar Hussain
66-	Te Seeing eye : Selection from the urdu and Persian Ghazals of Ghalib	Mirza Ghalib
67-	Khatiya Watiya	Ashfaq Ahmad
68-	Bazm Araiyan	Muhammad khan
69-	Piya rang kala	Baba Muhammad Yahya khan
70-	Khaak aur Khoon	Naseem Hijazi
71-	Meer Taki Meer	Prakash Pandit
72-	Gardish-e-Rang-e-chaman	Qurratulain Hyder

(Webliography-16)

6.6 ऐप्स :

This applications consists of different poems. A great fun and an educational

tools especially for preschool and kindergarten toddler.

1. उठो बेटा आंखे खोलो
2. आलू मियां, आलू मियां
3. एक था तीतर एक बटेर
4. अन्डा रोटी दही पनीर
5. बादल गरजे
6. आओ बनाएं बुलबुले
7. धोबी आया कपड़े लाया
8. मछली
9. प्यासा कौआ
10. बिल्ली
11. रेल का इंजन
12. श्रेया की गुड़िया
13. हमने देखा चिड़िया घर
14. अब्बू लाए मोटर काल
15. एक दो
16. तितली

(Webliogrophy-15)

6.7 यू–ट्यूब चैनल्स :

यू ट्यूब एक Application होता है इसमें विभिन्न प्रकार के वीडियो अपलोड रहते हैं। यू–ट्यूब एक साझा बेवसाइट (Video Sharing) है जहाँ उपयोगकर्ता वेबसाईट पर वीडियो देख सकता है, रेटिंग दे सकता, टिप्पणियाँ छोड़ सकता है और वीडियो क्लिप साझा कर सकता है।

वर्तमान में मोबाइल फोन भी शिक्षा का एक सशक्त माध्यम बन गया है फोन में विभिन्न प्रकार के एप्लीकेशन होते हैं, जिनसे शिक्षा प्राप्त की जा सकती है।

(Webliography-14)

उर्दू से सम्बन्धित यू–ट्यूब चैनल्स के नाम अग्रलिखित हैं–

6.7.1 लोकप्रिय चैनल–

1. द उर्दू टीचर–उर्दू सिखाने वाला चैनल।
2. जीम हेल्थ टिप्स– नफ्स की शरली।
3. देसी हेल्थ टिप्स– हेयर फॉल कन्ट्रोल टिप्स, ब्लड प्रेशर का इलाज (उर्दू में)

6.7.2 बच्चों के लिए उर्दू यू–ट्यूब चैनल–

1. अलादीन एण्ड हिज मैजिक लैम्प
2. प्रिन्सेज स्टोरीज इन उर्दू
3. उर्दू फेयरी टेल्स
4. द फ्रॉस प्रिन्स

6.7.3 तुक–

1. द अग्ली डक्लिंग इन उर्दू
2. पीटर पैन इन उर्दू
3. प्रिन्सेस स्टोरी इन उर्दू

6.7.4 जीवन शैली–

1. उर्दू इन थ्री मिनट्स
2. टीच मी योर लैंग्वेज
3. हाऊ टू टाइप उर्दू यूजिंग योग बॉइस ऑन एन्ड्राइड

6.7.5 ज्ञान–

1. हिन्दुस्तानी : हिन्दी एण्ड उर्दू– ए सिंगल लैग्वेज
2. टॉप सिक्स जोक्स इन उर्दू
3. शुरूअली पाठ–1 के लिए उर्दू

6.7.6 पाकिस्तान–

1. फनी स्पीच इन उर्दू
2. वेरी अमेजिंग स्पीच ऑन 14 अगस्त इन उर्दू
3. फनी कॉन्स इन पाकिस्तान उर्दू

6.7.7 इस्लाम चैनल उर्दू–

1. हमारा मुस्तकबिल : शुड पैरेन्ट्स बी फ्रेन्ड्स

2. हमारा मुस्तकबिल : सोशल मीडिया एण्ड चिल्ड्रेन

3. हमारा मुस्तकबिल : रिस्पेक्टिंग योग पैरेन्ट्स

4. हमारा मुस्तकबिल : हाऊ टू डेवलप स्किल्स

5. हमारा मुस्तकबिल : हाऊ टू रेज योर ब्वॉयज

6. हमारा मुस्तकबिल : एवरी फ्राइडे 11:00 am

6.8. उर्दू के विभिन्न सॉफ्टवेयर :

6.8.1 वर्तनी जाँचक : (Spell checker)

वर्तनी जाँचक या स्पेल चेकर ऐसा कम्प्यूटर प्रोग्राम है जो स्वयं या किसी अन्य प्रोग्राम से जुड़कर किसी भाषा में लिखे पाठ के शब्दों की वर्तनी की जाँच करता है और जो शब्द गलत हों, उनके लिए शुद्ध वर्तनी वाले वैकल्पिक शब्द प्रस्तुत करता है।

हिन्दी के लिए सबसे पहले वर्तनी जाँचक माइक्रोसॉफ्ट ने ऑफिस 2003 ने प्रस्तुत किया था। इसके गलत वर्तनी वाले शब्दों को अंग्रेजी की ही तरह हाईलाइट कर दिया जाता था तथा सही शब्द सुझाया जाता था। माइक्रोसॉफ्ट के प्रूफिंग टूल हिन्दी वर्तनी जाँच के लिए सबसे लोकप्रिय है।

भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास परिषद ने भी ऐसी एक सुविधा निःशुल्क उपलब्ध कराई है जिसे http://ildc.in/Hindi/Hindex.aspx से डाउनलोड किया जा सकता है। (Webliography 1)

6.8.2 अनुवादक : (Translator)

- अंकों व अक्षरों को मशीनी भाषा में अनुवादित करने वाला प्रोग्राम।
- अनुवादक (भाषा) : एक भाषा की सामग्री को अन्य भाषा में अनुवाद करने वाला।

(Webliography 3)

6.8.3 टंकण (उर्दू) :

परिचय : टाइपराइटिंग उर्दू उर्दू टंकण/उर्दू सहायक और या प्राइवेट में उर्दू टंकण प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत शिक्षार्थी पाने के लिए सक्षम हो जाएगा। उर्द्व निजी संगठनों में जहां काम से माध्यम से काफी हद तक उर्दू है। इस कोर्स में उर्दू प्रकाशनों घरों में और विभिन्न रिपोर्टिंग मीडिया के लिए किया जा रहा है। काम के लिए मांग मन में रखते हुए विकसित किया गया है।

उद्देश्य :

टाइपराइटिंग की कला के साथ शिक्षार्थियों को कुंजीपटल समारोह के साथ शिक्षार्थियों को परिचित कराने के उन्हें उचित प्रदर्शन के साथ किसी भी बात लिखे रोजगार के लिये एक व्यावसायिक कौशल प्रदान करके सीखने को तैयार।

प्रवेश योग्यता :

शिक्षा एक विषय के रूप में दसवीं कक्षा पास उर्दू के साथ।

नौकरी के अवसर :

1 स्वरोजगार के विभिन्न कार्यालयों से अनुबंध पर काम टाइपिंग का कार्य ।

2. मजदूरी रोजगार, उर्दू टाईपिस्ट के कनिष्ठ सहायक।

पाठ्यक्रम अवधि

वन इयर

मूल्यांकन योजना :

आंतरिक मूल्यांकन : एन.ए.

बाह्य परीक्षा

कुल अंक – 100

सिद्धान्त–प्रैक्टिकल 30 प्रतिशत–70 प्रतिशत

पास 33 प्रतिशत थ्योरी में प्रत्येक और व्यावहारिक अलग। (Webliogrophy 4)

6.8.4 उर्दू शब्दकोष (Urdu dictionary)

यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा उर्दू से हिन्दी उर्दू से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से उर्दू शब्दार्थ का पता लगाया जाता है तथा कुछ ही मिनट में आई हुयी समस्या का क्षण भर में समाधान हो जाता है उर्दू शब्दकोष की आवश्यकता उर्दू से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता बन चुकी है।

सप्तम अध्याय : निष्कर्ष, उपादेयता एवं सुझाव

7.1 प्रस्तावना :

किसी भी शोध का उद्भव आवश्यकता एवं समस्या से होता है जिसकी पूर्ति के लिए शोधकर्ता वांछनीय उद्देश्यों का निर्धारण कर शोध अध्ययन कार्य का प्रारम्भ करता है तथा उनके परिणाम के रूप में अपने उद्देश्यों को वास्तविक रूप प्रदान करता है। अतः सम्पूर्ण शोधकार्य की शोधप्रक्रिया में प्रदत्तों के एकत्रीकरण, उचित व स्पष्ट प्रस्तुतीकरण विश्लेषण तथा व्याख्या के पश्चात यह आवश्यक हो जाता है कि अध्ययन की उपलब्धियों के आधार पर शोधकार्य का निष्कर्ष निकाला जाए, जिससे शोध पूर्णता को प्राप्त हो सके।

किसी भी शोधकार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्णतः विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यह शोध पूर्णतः शोधक्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि कुछ पहलू प्रायः अछूते रह जाते है। इसलिए परिणाम के साथ–साथ यह भी नितान्त आवश्यक है कि शोध अध्ययन के संदर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जाए जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है। अतः प्रस्तुत अध्याय को उपर्युक्त वर्णित बिन्दुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है–

i- शोध अध्ययन के निष्कर्ष

ii- शोध अध्ययन की शैक्षिक उपदेयता

iii- अध्ययन के सुझाव

7.2 शोध अध्ययन के निष्कर्ष :

i- उर्दू विद्यालय के अवलोकन में यह पाया गया कि नियुक्त उर्दू अध्यापकों को उर्दू भाषा का कोई ज्ञान नहीं है तथा वह उर्दू में अपना नाम भी लिखना नहीं जानते हैं। उर्दू अध्यापकों की वास्तविक शैक्षिक योग्यता संदिग्ध है।

ii- द्वितीय भाषा के रूप में उर्दू का वर्तमान में अत्यन्त महत्व है क्योंकि T.E.T. और C.T.E.T. में योग्यता परीक्षा में वैकल्पिक भाषा के रूप में रखी जाती है तथा यह अत्यन्त स्कोरिंग विषय है किन्तु प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर तक इसकी कोई सुचारू व्यवस्था नहीं है।

iii- प्रस्तुत लघु शोध में यू0पी0 बोर्ड की उर्दू पाठ्यपुस्तकों प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक आलोचनात्मक अध्ययन कर कमियों का आकलन किया गया। यू0पी0 बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों में रूच्यात्मक पाठों की कमीं पायी गयी। जिसमें लेखक परिचय एवं चित्रों का अभाव है। आधुनिक लिंकों का अभाव है। नवीनतम सामग्री का अभाव, अनाकर्षित श्वेत श्याम (Black and White) मात्र, संदर्भ का अभाव, संस्करण का अभाव है।

iv- प्रस्तुत लघु शोध में उर्दू शिक्षण के आधुनिक आयामों जैसे ई.बुक्स, वेबसाइट्स, ब्लॉग्स, यू–ट्यूब चैनल्स तथा सोशल मीडिया का अध्ययन कर नवीन एवं आधुनिक सामग्रियों का संग्रह किया गया तथा यह पाया गया कि आधुनिक आयामों के अन्तर्गत प्रचुर मात्रा में उर्दू सम्बन्धी नवीन सामग्री एवं बच्चों के लिए रूच्यात्मक कहानियां एवं कविताएं उपलब्ध हैं।

v- प्रस्तुत लघुशोध में उर्दू के विभिन्न सॉफ्टवेयरों का अध्ययन किया गया और

पाया गया कि उर्दू से सम्बन्धित अनेक सॉफ्टवेयर उर्दू वर्तनी जॉचक (Spell Checker), प्रवाचक, उर्दू शब्दकोष, अनुवादक एवं टंकण आदि उपलब्ध है।

vi- उर्दू के पाठ्यपुस्तकों में इस्लाम धर्म से सम्बन्धित सामग्री का बाहुल्य है।

vii- उर्दू के पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए जैसे– आंतरिक रूप सुन्दर व स्पष्ट, अनुभवी अध्यापकों के पाठों को पुस्तक में स्थान आदि देना चाहिए।

viii- प्रस्तुत अध्ययन में उर्दू शिक्षण की विषयवस्तु की बोधगम्यता का अध्ययन किया गया तथा यह पाया गया कि सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के मध्य उर्दू की बोधगम्यता शून्य प्रायः है।

7.3 *शोध अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता :*

उर्दू भाषा की शैक्षिक उपादेयता भारतीय संविधान में वर्णित 22 भाषाओं से स्पष्ट होती है। यह वर्तमान में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर द्वितीय वैकल्पिक भाषा के रूप में अध्ययन–अध्यापन में रखी गयी है। यह अन्य बोर्ड पर भी पढ़ाई जाने वाली भाषा है जैसे–मदरसा बोर्ड आदि। देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में उर्दू शिक्षा दी जाती है। वैसे उर्दू की प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था मदरसों के अलावा सरकार द्वारा संचालित स्कूलों में भी की गयी है। इसके अलावा जिनकी मातृभाषा उर्दू नहीं है, उनके लिए देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा जैसे कोर्सेस का संचालन किया जाता है।

यदि आपने बारहवीं तक उर्दू भाषा एक विषय के रूप में पढ़ रखी है तो आगे आप बी.ए. (आनर्स), उर्दू एम.ए. उर्दू के अलावा कोई भी कोर्स उर्दू भाषा में कर सकते हैं। इसके अलावा देश के बहुत से प्रमुख विश्वविद्यालय उर्दू भाषा में जनसंचार के लिए पी.जी. डिप्लोमा कोर्सेस भी संचालित कर रहे हैं।

उर्दू में सर्टिफिकेट कोर्स के लिए दसवीं या बारहवीं पास और डिप्लोमा के लिए उर्दू में सर्टिफिकेट कोर्स पास होना जरूरी है। बारहवीं स्तर तक एक विषय के रूप में उर्दू भाषा होने पर उर्दू में एम.ए. और पी.जी. डिप्लोमा कोर्सेस के लिए किसी खास योग्यता की जरूरत नहीं होती।

उर्दू में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, एडवांस डिप्लोमा और पी.जी. डिप्लोमा के सारे कोर्सेस की अवधि एक वर्ष निर्धारित है जबकि बैचलर डिग्री के लिए 3 वर्ष तथा मास्टर डिग्री के लिए दो वर्ष अवधि निर्धारित है। उर्दू में बैचलर, मास्टर, एम.एड., एम. फिल, पी.एच.डी आदि की डिग्री हासिल करने वालों के लिए रोजगार के बहुत सारे अवसर उपलब्ध है क्योंकि इस भाषा की पढ़ाई विदेशों में अनिवार्य या ऐच्छिक रूप से कहीं न कहीं होती ही है।

अतः कहीं भी उर्दू शिक्षक बनकर भविष्य बनाया जा सकता है उर्दू में पी.एच.डी. करने वाले कॉलेजों और विश्वविद्यालय में बतौर लेक्चर, रीडर एवं प्रोफेसर की नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। उर्दू में शोधकार्य करने के लिए यू.जी.सी. कई तरह की छात्रवृत्तियां प्रदान करती है। देश एवं विदेश में विभिन्न मंत्रालयों में उर्दू अनुवादक का पद निर्धारित है। अन्य भाषा के साथ उर्दू डिग्री वाले इस पद के हकदार बन सकते हैं।

दुनिया में प्रायः हर देश के दूतावास एक—दूसरे के यहाँ स्थापित हैं जिसके द्वारा भाषा, साहित्य, संस्कृति, अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध स्थापना आदि से संबन्धित कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। आकर्षक वेतन व अन्य सुविधाओं के लिए उर्दू डिग्री होल्डर इसमें अपना भविष्य बना सकते हैं। उर्दू विषय अपनाकर अनेक प्रतियोगी विभिन्न राज्य स्तरीय एवं संघ स्तरीय उच्च प्रशासनिक पदों को भी प्राप्त कर सकते हैं।

अतः उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि उच्च स्तर पर उर्दू का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

i- प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर उर्दू की बहुत ही दयनीय स्थिति है जिसका सुधारा जाना अति आवश्यक है।

ii- उर्दू की पाठ्य पुस्तकों में इस्लाम धर्म की अत्यधिक बाहुल्यता है जिससे उर्दू इस्लाम धर्म की भाषा मात्र बनकर रह गई है अतः यह हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में ज्यादा उत्थान नहीं कर पा रही है क्योंकि इसे धर्म विशेष से जोड़ दिया गया है।

iii- आज आवश्यकता इस बात की है कि उर्दू के शिक्षण संस्थानों में शैक्षिक गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए

7.4 ***अध्ययन के सुझाव :*** शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन की उपादेयता के रूप में निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं–

i- उर्दू विद्यालय के अवलोकन में यह पाया गया कि नियुक्त उर्दू अध्यापकों को उर्दू भाषा का कोई ज्ञान नहीं है तथा वह उर्दू में अपना नाम भी लिखना नहीं जानते हैं अतः सरकार को उर्दू की शैक्षिक गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता है तथा इनकी नियुक्ति के लिए कोई योग्यता परीक्षा प्रस्तावित की जाए।

ii- उर्दू को T.E.T और C.T..E.T. में योग्यता परीक्षा में वैकल्पिक भाषा के रूप में रखी गई है किन्तु प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर तक इसकी कोई सुचारू व्यवस्था नहीं है अतः सरकार को इसके लिए गम्भीरता से कार्य करने की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

iii- यू0पी0 बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया गया जिसमें रूच्यात्मक पाठों की कमीं पायी गई। अतः छात्रों की रूचियों को ध्यान में रखते हुए कुछ विशिष्ट क्रियाकलापों का पाठ्यपुस्तक में समानेशन किया जाना चाहिए

तथा इनकी कमियों को दूर करना चाहिए पाठ रूचिकर बन सकें।

iv- प्रस्तुत लघु शोध में आधुनिक आयाम के अन्तर्गत जैसे– उर्दू ब्लॉग्स, यू–ट्यूब चैनल्स, ई–बुक्स में प्रचुर मात्रा में उर्दू सम्बन्धी नवीन सामग्री एवं बच्चों के लिए रूच्यात्मक कहानियां एवं कविताएं उपलब्ध हैं जिनकों विद्यालय में कभी–कभी डिजिटल कक्षा में छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिसमें वह उर्दू भाषा के प्रति आकर्षित हों तथा सीखनें में रूचि लें।

v- उर्दू के विभिन्न सॉफ्टवेयरों की व्यावहारिक कठिनाईयों का अध्ययन किया गया जैसे–वर्तनी जॉचक, प्रवाचक, उर्दू शब्दकोष, अनुवादक एवं टंकण आदि का सर्वप्रथम शिक्षक को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा शिक्षक द्वारा बाद में छात्रों को।

vi- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्त्री द्वारा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है किन्तु भविष्य में इसका अध्ययन उच्च स्तर तक किया जा सकता है।

vii- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध शोधकर्त्री द्वारा यू0पी0 बोर्ड तक ही सीमित रखा गया है तथा भविष्य में इसका अध्ययन विभिन्न बोर्डों पर किया जा सकता है जैसे– मदरसा बोर्ड, एन.सी.ई.आर.टी, सी.बी.एस.ई आदि।

viii- प्रस्तुत लघु शोध में महाराष्ट्र व नई दिल्ली के शोधकार्य ही शामिल किए गए हैं तथा भविष्य में अन्य राज्यों के शोधकार्यों का अध्ययन किया जा सकता है।

ix- पाठ्यपुस्तकों का मूल्य इतना कम हो कि सभी छात्र उसे आसानी से खरीद सकें।

x- पाठ्यपुस्तकों में लिखित सामग्री के साथ–साथ प्रदर्शनात्मक सामग्री भी उपलब्ध हो जिससे छात्रों को पाठ्यपुस्तकें अपनी ओर आकर्षित कर सकें।

xi- पाठ्यपुस्तकों में लेखक परिचय का भी समावेशन किया जाना चाहिए।

xii- पाठ्यपुस्तकों की छपाई सरकार स्वयं अपने हाथ में लें।

xiii- पाठ्यपुस्तकों में पाठ से सम्बन्धित माने तथा 'आओ करके सीखें' क्रिया अवश्य होनी चाहिए जिससे छात्रों का मूल्यांकन करने में सरलता हो सके।

xiv- उर्दू पाठ्यपुस्तकों में नवीनतम सामग्री का अभाव है जिसमें कुछ नवीन तथ्यों को शामिल किया जाना अत्यावश्यक है।

xv- पाठ्यपुस्तकों को आकर्षित बनाने हेतु पाठ्य सामग्री को रंगी–बिरंगी की जानी चाहिए।

xvi- पाठ्यपुस्तकों में संस्करण का अभाव है अतः संस्करण वर्ष अवश्य लिखा जाना चाहिए।

xvii- पाठ्य पुस्तकों में इस्लाम धर्म से सम्बन्धित सामग्री का बहुमूल्य है अतः पाठ्यपुस्तकों को धर्म विशेष से नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

परिशिष्ट : अ

فہرست مَضامین

परिशिष्ट : ब

فہرست اسباق

Published by :

Prabha Publications

(An imprint of Arvind prakashan Pvt. Ltd.)

Sports Complex Enclave, Delhi Road, Meerut – 250 002

Ph : (0121) 2521607, 2533607, 9927070730 Fax : (0121) 2520263

E-mail : *info@arvindprakashan.com* Web : *arvindprakashan.com*

Branch Offices :

✠ Laxmi Pustkalaya Compound, Naveen Kothi, Opp. Khudabaksh Library, Ashok Rajpath, **Patna** ✆ 0612-2302829, 9430312773 Fax. 0612-2379915 ✠ New Pan Dareeba, Opp. T.B. Clinic, Chaupla Road, **Bareilly** ✆ 0581-2452767, 9927070729 ✠ A-3, St. Thomas Church Compound

परिशिष्ट : स

فہرست مَضامین

परिशिष्ट : द

فہرست مضامین

परिशिष्ट : य

فہرست مضامین

परिशिष्ट : र

فہرست

परिशिष्ट : ल

فہرست
ہماری زبان (۲)

परिशिष्ट : व

فہرست

ہماری زبان (۳)

परिशिष्ट : श

सूरा 5, अल-माइदा | 146 | पारा 6

5. अल-माइदा

(मदीना में उतरी— आयतें 120)

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

1. ऐ ईमान लानेवालो ! प्रतिबंधों (प्रतिज्ञाओं, समझौतों आदि) का पूर्ण रूप से पालन करो। तुम्हारे लिए चौपायों की जाति के जानवर हलाल हैं सिवाय उनके जो तुम्हें बताए जा रहे हैं; (हलाल जानवरों को खाओ) लेकिन जब तुम इहराम[1] की दशा में हो तो शिकार को हलाल न समझना। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, आदेश देता है।

2. ऐ ईमान लानेवालो ! अल्लाह की निशानियों का अनादर न करो; न आदर के महीनों का, न क़ुरबानी के जानवरों का और न उन जानवरों का जिनकी गरदनों में पट्टे पड़े हों और न उन लोगों का जो अपने रब के अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता की चाह में प्रतिष्ठित गृह (काबा) को जाते हों। और जब इहराम की दशा से बाहर हो जाओ तो शिकार करो। और ऐसा न हो कि एक गिरोह की शत्रुता, जिसने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो। अल्लाह का डर रखो; निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देनेवाला है।

1. हज और उमरा के अवसर पर पहना जानेवाला विशेष परिधान।